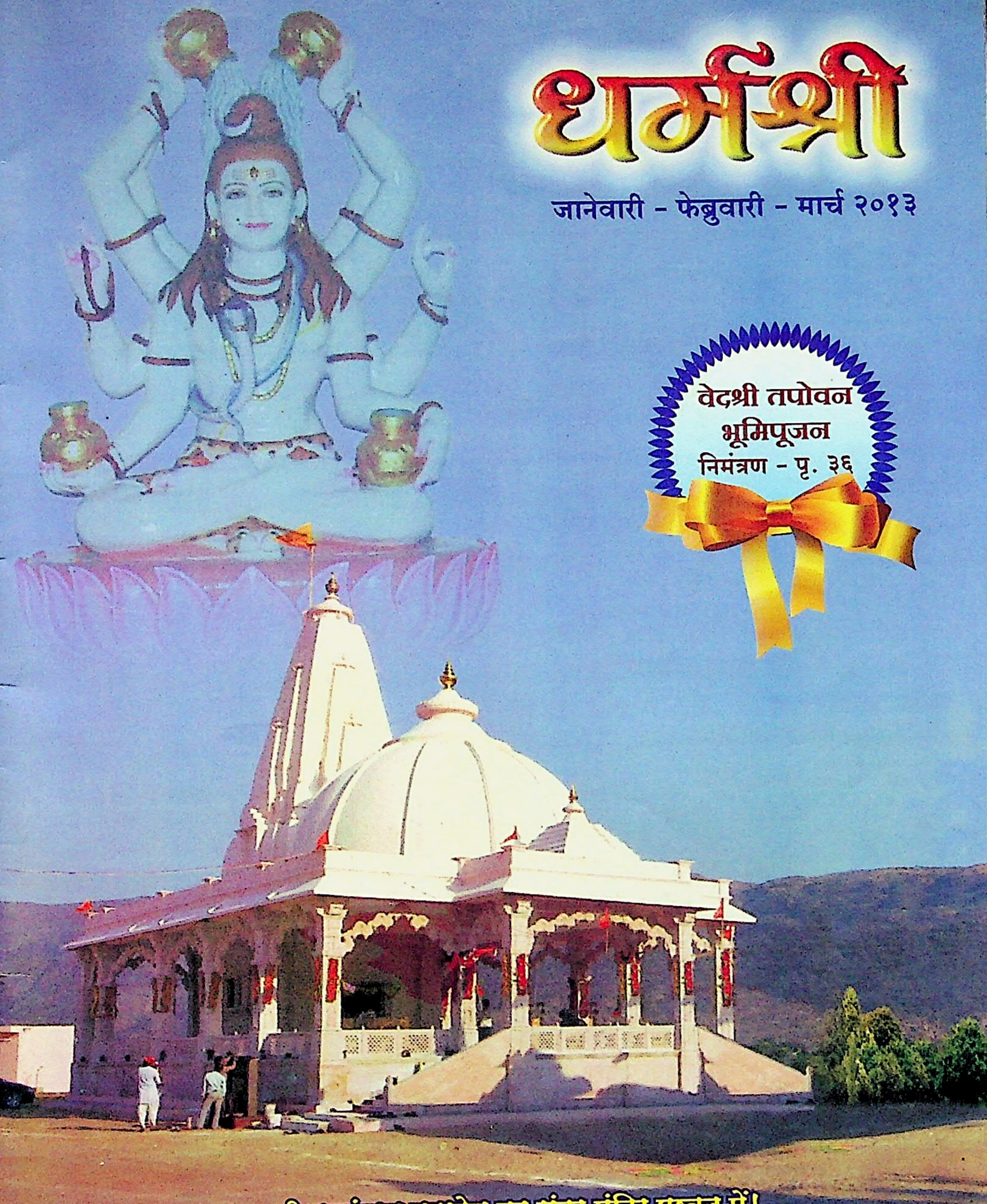
धर्मश्री

जानेवारी - फेब्रुवारी - मार्च २०१३



वेदश्री तपोवन
भूमिपूजन
निमंत्रण - पृ. ३६

श्री मृत्युंजय महादेव का सुंदर मंदिर पुष्कर में।
विद्यालय का अधिष्ठान यह भरता भक्तिभाव उरमें।।

रोहित शर्मा



प.पू. कांचीपीठाधीश के शुभाशीष



पुष्कर छात्रावासका उद्घाटन



श्री. हिरालालजी मालू - अमृत महोत्सव



वे.मू. अक्षय टाकळकर आदर्श छात्र सम्मान



डॉ. रूपकिशोरशास्त्रीजी एवे श्री. राधेश्यामजी चांडक



स्व. श्यामजी बाहेती - श्रद्धांजलि

परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित



धर्मश्री

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित



धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, दूरमुद्रणः (०२०) २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाइट : www.dharmashree.org

वर्ष १३ | अंक १ | चैत्र, युगाब्द ५११० | त्रैमास मार्च २०१३

सूचना

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

– संपादक

अनुक्रम

विशेष

श्रद्धेय प.पू.स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के भारत माता मंदिर, हरिद्वार में पट्टाभिषेक (दायित्व – ग्रहण) समारोह का सीधा प्रसारण दि.१२ मई २०१३ को प्रातः ९.०० से १२.०० संस्कार चैनेल पर अवश्य देखें।

गतिविधियाँ

✦ आवश्यक सूचना ✦

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेद विद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''धर्मश्री'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498, फैक्स : 0145-2662811
ई–मेल : bhalchandravyas@yahoo.co.in

धर्मश्री के इस अंक के यजमान
मे. पाटे डेव्हलपर्स, पुणे
साभिनंदन धन्यवाद !

संपादकीय

श्रद्धेय परमपूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के सभी भक्तगण एवं धर्मश्री परिवार के सभी धर्मप्रेमी सदस्य जिस क्षण की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे वह मंगल घटिका अभी समीप आई है। आगामी दिनांक ४ मई को प्रात: ९ बजे हमारे स्वामीजी के संन्यासदीक्षा गुरु, निवृत्त शंकराचार्य, प.पू. महामंडलेश्वर गुरुस्वामी श्री सत्यमित्रानंद गिरिजी महाराज के पावन करकमलोंद्वारा भूमिपूजन संपन्न होने जा रहा है। इसी के साथ प्रारंभ होगा इस प्रकल्प का भवन निर्माण कार्य।

गत वर्ष बाईस वर्षों से चला आ रहा महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का कार्य यह उसके वेदसेवा कार्य की नींव थी, उसका अधिष्ठान था। भगवान् की कृपा एवं अनगिनत वेदप्रेमीयों के समर्पित सहयोग से सुस्थिर हुआ। परंतु वर्तमान समाज को वेदों में निहित अनमोल तथ्यों का वास्तव में लाभ हो इस हेतु अधिक उच्चस्तरीय शिक्षा, अनुसंधान एवं परीक्षण की आवश्यकता थी। 'वेदश्री तपोवन' में इसी दिशा में कार्य होगा।

लगभग एक वर्ष पूर्व जब 'वेदश्री तपोवन' का विकास करना तय हुआ तब पू. स्वामीजीने इच्छा प्रकट की कि सर्वप्रथम इस भूमिपर एक गोशाला का निर्माण हो, क्योंकि जब किसी भूमिपर गौएं विहार करती हैं तब वह पवित्र होती है एवं वहाँ की सभी बाधाएं दूर होती हैं। तुरंत ही वहाँ गोशाला का निर्माण किया गया। न्यासी श्री. केले काकाजी ने ५ गौओंका दान किया। आज वहाँ कुल छह गौएं एवं चार बछडे विचरण कर रहे हैं। हमारे आलंदी स्थित वेदविद्यालय के छात्र इन गौओं का अमृतमय दूध प्राशन कर रहे हैं।

अचरज की बात तो यह हैं कि पू. स्वामीजी के कथनानुसार वास्तव में इस प्रकल्प के विकास की दिशा में सभी बाधाएं शीघ्रता से दूर होने लगी हैं। सभी शासकीय कार्यालयों का एवं अन्य संबंधित व्यक्ति तथा संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हो रहा है। इस में कोई संशय नहीं कि वर्ष २०१५ में, जब महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान अपनी रजत जयंति मना रहा होगा, 'वेदश्री तपोवन' पूर्ण रूप से साकार हो कार्यान्वित हो चुका होगा।

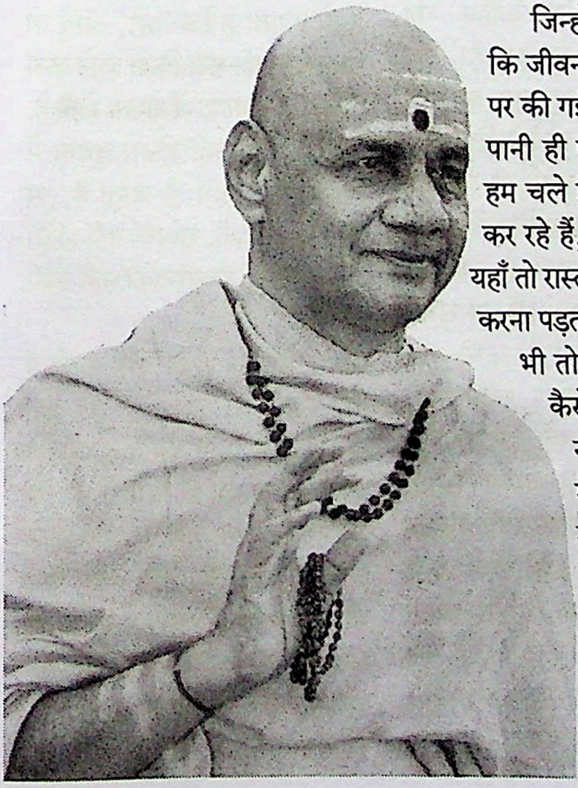
योगवासिष्ठ (२)

प्रारब्ध भूत हैं; पुरुषार्थ वर्तमान और भविष्य

विगत अंक में हमने देखा कि भगवान् श्री राम भी युवावस्था में, वैराग्य में डूबकर अपने गुरु वसिष्ठ जी से पूछते हैं-कर्म प्रबल है या भाग्य? साथ ही वे कई तर्क देकर कर्म की अपेक्षा भाग्य को मानव जीवन में प्रमुख बतलाते हैं। इसके उत्तर में गुरुवसिष्ठ उन्हें समझाते हुए कर्म को ही प्रधान बताते हैं।

प्रस्तुत अंक में प.पू. गुरुदेव हमें इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए बताते हैं कि 'भवसागर क्या है तथा प्रयत्नवाद और प्रारब्धवाद के कितने प्रकार हैं। साथ में यह भी बताया है कि पुरुषार्थ की मानव जीवन में क्या प्रमुख भूमिका है।

दर्शन के क्षेत्र में 'भवसागर' शब्द अपरिचित नहीं है। इस विश्व के फैलाव को ही भवसागर कहते हैं। इसी विश्व के फैलाव को कुछ लोगों ने 'भवारण्य' भी कहा है तो कुछ लोगों ने इसे 'भवरोग' भी कहा है। इस विश्व के बारे में, ब्रह्मा की इस सृष्टि के बारे में, हर शब्द में अलग-अलग विचार व्यक्त किया गया है।



जिन्होंने इसे **'भवसागर'** कहा है, वे यह कहना चाहते हैं कि जीवन एक यात्रा है। यह सत्यस्थिति है। परन्तु यह यात्रा भूमि पर की गई यात्रा नहीं है। यह सागर-यात्रा है। सागर-यात्रा में नीचे पानी ही पानी रहता है और ऊपर नीला-नीला गगन। कहाँ से हम चले हैं, यह बात ध्यान में नहीं आती। किस दिशा में यात्रा कर रहे हैं, किनारा कितना दूर है, कुछ भी समझ में नहीं आता। यहाँ तो रास्ता ही नहीं दिखता। दिग्दर्शक यंत्र के सहारे ही पथ निश्चित करना पड़ता है। और फिर, सागर की भयावह लहरें, तूफान- इनका भी तो सामना करना पड़ता है। यह यात्रा समाप्त कब होगी? कैसे होगी?... प्रतिक्षण यह भय बना रहता है कि जीवन नौका कहीं डूब तो नहीं जाएगी; क्योंकि नौका के तले में एक छेद भी तो है। उससे पानी अंदर आ रहा है; उसे उलीचना पड़ता है। ऐसी है इस 'भवसागर' की यात्रा।

दूसरे किसी ने इसे **'भवारण्य'** कहा है। अरण्य में मार्ग ढूँढ़ कर चलना दूभर ही होता है। यहाँ तो पगडंडियाँ भी नहीं होती। घने जंगल में दिशा का ज्ञान नहीं हो पाता। इस भवारण्य की यात्रा को क्या कहा जाए, कुछ समझ में नहीं आता। वृक्ष, लताएँ, फूल इस अरण्य में खिले

मनुष्य काम करने से नहीं अपितु न करने से जल्दी मरता है। - पूज्यपाद

रहते हैं। जितना जी चाहे उतने फल, कंद मिल सकते हैं। यह अरण्य का 'मेवा' दिल को खुश कर देता है। कदम-कदम पर पानी के निर्झर बहते हैं। शुक-सारिका-मोर आदि का सौंदर्य, कूजन मन मोह लेता है। पर उसी के साथ जंगली हिंसक पशु कब हमला करेंगे, कुछ कह नहीं सकते? जोंक, लाल चींटियाँ बदन नोंच लेती हैं। यदि कोई साथी मिल जाए तो अच्छा लगता है। हँसते-खेलते रास्ता कट जाता है। परन्तु यदि वही साथी दुखदायी हो तो वह एक अलग ही सिरदर्द बन जाता है। इसी कारण 'भवारण्य' से यात्रा करते समय मन के सम्मुख प्रश्न खड़ा होता है कि यह 'संसार सुखमय है या दुःखमय, अमृत से भरा है या विष से सना है?'

तीसरे ने इस सृष्टि को **'भवरोग'** कहा है। रोग स्वास्थ्य खराब कर देता है, बेचैन कर देता है। धीरे-धीरे मौत की ओर ले जाता है। जीवन 'भवरोग' ही है; क्योंकि जनमते ही मृत्यु पीछे लग जाती है। जिस दिन जन्म लेते हैं; उसी दिन से निरंतर मृत्यु की ओर ही तो चलते रहते हैं, अनेक प्रकार के रोग होते हैं। आप कहेंगे कि रोगों का इलाज भी तो होता है। दवाएँ भी तो होती हैं। पर मेरे मन में विचार उठता है कि इन 'दवाओं' 'उपचारों' में पारंगत, विशेषज्ञ, बड़े-बड़े उपाधिधारक, विख्यात डॉक्टर भी तो कभी न कभी मर ही जाते हैं न। इसके माने ये हुए कि भवरोग से हर कोई ग्रस्त है। जीवन भव-रोग-ग्रस्त ही होता है। - हमारा 'जीवन' भी तो 'स्वच्छ' कहाँ होता है? जीवन में स्वास्थ्य नहीं होता, शांति नहीं होती। 'यह चाहिए' 'वह चाहिए' 'यह प्राप्त करना ही है।' 'यह कमी रह गई है।' अंत तक हम कोई न कोई वासना पूरी करने के लिए जी-जान से कोशिश करते ही रहते हैं। इतनी नदियाँ इस सागर में पानी डालती रहती हैं पर यह सागर तो 'दुर्भर' ही है। 'पेट' और 'मन' भी तो सागर की तरह 'दुर्भर' ही है। कभी तृप्ति होती ही नहीं। अपूर्णता, सदैव भूख, बुभुक्षा बनी ही रहती है। एक रोग है, उसका नाम है 'भस्म-रोग'। कितना भी खाओ इस रोगी का पेट भरता ही नहीं है। आधे-आधे घण्टे के बाद उसे भोजन चाहिए। इतनी भूख लगती है कि तड़पता है जैसे चार-छह दिनों का भूखा हो। भव-रोग भी इसी तरह होता है। जीवन मानों 'भस्म रोग' है। वासनाओं की कितनी भी पूर्ति करो, उनकी मांग कभी रुकती ही नहीं। **'वासना' ही 'भवरोग' है।**

तो आखिर जीवन क्या है?:-

अब इसे भव-सागर कहें, अरण्य कहें या रोग कहें, मन में आता है कि इसे कभी न कभी तो समाप्त होना ही है। परन्तु आदमी इस तरह कभी नहीं सोचता। बचपन तो अज्ञान में ही बीत जाता है, खेलकूद में समाप्त हो जाता है। जवानी मस्ती में चली जाती है। फिर बुढ़ापा आता है तो लगता है कि 'अरे, आयु तो समाप्त हो गई। क्या किया हमने जन्म लेकर? युवावस्था में क्षमता होती है, परन्तु विवेक नहीं होता। बुढ़ापे में विवेक तो जाग्रत हो जाता है, पर क्षमता नहीं होती, सामर्थ्य नहीं होती। जीवन ऐसी शोकान्तिका नहीं होनी चाहिए।

बचपन तो अज्ञान में ही बीत जाता है, खेलकूद में समाप्त हो जाता है। जवानी मस्ती में चली जाती है। फिर बुढ़ापा आता है तो लगता है कि 'अरे, आयु तो समाप्त हो गई। क्या किया हमने जन्म लेकर? युवावस्था में क्षमता होती है, परन्तु विवेक नहीं होता। बुढ़ापे में विवेक तो जाग्रत हो जाता है, पर क्षमता नहीं होती, सामर्थ्य नहीं होती। जीवन की ऐसी शोकान्तिका नहीं होनी चाहिए।

भगवान् शंकराचार्य कहते हैं कि 'यावत् जरा दूरतः' - जब तक बुढ़ापा दूर है, याने जब तक शरीर में शक्ति है, क्षमता है, तब से ही इस भव सागर से पार होने के उपाय करने चाहिए। नहीं तो यह 'भव-चक्र' ऐसा ही घूमता रहेगा। 'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं'। पुनरपि जननीजठरे शयनं। इह संसारे खलु दुस्तारे' जन्म-मृत्यु, फिर से जन्म-मृत्यु- इस प्रकार क्रम चलता

ही रहेगा। यही 'घोर-संसार' है।

परन्तु अनेक लोग हैं जिन्हें इस संसार की भयावहता का भान ही नहीं होता। विवेक जग गया तो ही मनुष्य इससे छूटने का विचार कर सकता है। अन्यथा, 'गोबर के कीड़े बनाते हैं महल बड़े-बड़े'' उन कीड़ों को गोबर से घृणा ही नहीं होती। ज्ञानदेव भी पूछते हैं, ''पूय पंक के कीड़े। क्या उन्हें घृणा सताए?'' पीव में रहने वाले कीड़ों को पीव से घृणा नहीं होती। जो इससे ऊब जाए, घृणा करे; वही उससे छूटने के उपाय ढूँढ़ेगा।

इस भवसागर से पार होने के लिए, इस भवरोग से मुक्त होने के लिए शरीर में शक्ति के रहते ही साधन करना चाहिए। 'बाद में कर लेंगे। ऐसी क्या जल्दी है।' इस प्रकार का विचार ठीक नहीं है। इस कथन में क्या तुक है कि बुढ़ापा हमने इसीलिए धरा रक्खा है। तुम्हें क्या यह भरोसा है कि तुम्हारे लिए बुढ़ापा धरा रक्खा है?

पुरुषार्थ अनिवार्य है :-

हमारी संस्कृति ने यह सीख साग्रह दी है कि 'तप' करना चाहिए। सृष्टि के निर्माण के पहले ब्रह्मदेव ने भी तप किया था। बद्रीनाथ में ऐसी मूर्ति है कि भगवान् नारायण पद्मासन लगाकर तप कर रहे हैं। याने भगवान् विष्णु सृष्टि के पालन के लिए तप करते हैं। महेश कैलास पर तप ही करते रहते हैं। महेश तो ध्यानमग्न ही हैं। 'इये मार्गींचा कापड़ी। महेश अजुनी।' (ज्ञानेश्वर जी) तीनों देवता तपाचरण करते हैं।

यदि हम 'नई सृष्टि' निर्माण करना चाहते हैं, यदि हमें 'इस नई सृष्टि का पालन' करना है, यदि इस सृष्टि की थाह लेनी है तो तपाचरण अनिवार्य है। यह सब केवल तप से ही साध्य हो सकता है।

देवताओं के परिश्रम के बिना यह विश्व-चक्र नहीं चल सकता। यहाँ अखंड निर्मिति का कार्य चल रहा है। विश्व-नियमों का पालन अखंड रूप से चल रहा है। इन नियमों को कोई अज्ञान से या दुष्टता से भंग करे, तो भगवान् विष्णु फिर-फिर से अवतार लेते हैं। वेद कहते हैं कि देवता 'ऋतस्य गोप्ता' हैं। याने वे विश्वनियमों के रक्षक हैं। भगवान् विष्णु कभी नहीं कहते कि 'अब मैं क्षीरसागर में निद्राधीन हो रहा हूँ। मुझे आराम की आवश्यकता है। कोई मेरी नींद में बाधा न डाले। नहीं, भगवान् तो 'सज्जनों की रक्षा', 'दुर्जनों के विनाश' और 'धर्मसंस्थापन' के लिए पुनः पुनः अवतार लेते हैं। दूसरे शब्दों में वे 'तप' करते हैं। परिश्रम उठाते हैं। भगवान् महेश सभी विद्याओं-कलाओं के आदि गुरु हैं, योगिराज हैं, ज्ञान गंगा का उद्गम शिव के मस्तिष्क से ही हुआ है। इतना होते हुए भी वे तपाचरण करते हैं।

इसका अर्थ यही हुआ कि देवताओं को भी प्रयत्न करने पड़ते हैं, प्रयत्नवाद से वे भी मुक्त नहीं हैं। अतः हमें भी देवताओं से मार्ग पूछते हुए 'अपने जीवन के मार्ग पर चलना चाहिए।'

प्रयत्न श्रेष्ठ है या प्रारब्ध?:-

अब यह प्रश्न उठता है कि प्रयत्न श्रेष्ठ है या प्रारब्ध? यह 'वाद' भी प्राचीन काल से चला आ रहा है। श्रीमद् भगवद्गीता प्रारब्ध के लिए बीस प्रतिशत मान्यता देती है। कुछ बातें नियति के अधीन होती हैं; हमारे हाथ में नहीं होती। यह बात माननी ही पड़ती है। परन्तु अस्सी प्रतिशत प्रयत्नवाद को स्वीकार करना ही पड़ेगा। भूकंप हो जाए, उल्कापात हो जाए, ओले गिर पड़े, बहुत बड़ा तूफान आ जाए तो हम क्या कर सकते हैं? हमारी सामर्थ्य कम पड़ती है। परन्तु ऐसा तो कभी-कभार होता है। इस प्रकार की आपत्ति में हम कुछ नहीं कर सकते, यह बात माननी ही पड़ेगी, परन्तु 'उत्पात' नियम नहीं है। नियम 'ऋतुचक्र' ठीक से चलने का है। इसी कारण खेती, पशुपालन, वास्तुनिर्माण, बाँध बाँधना, विद्युत का उत्पादन आदि सारे काम करने ही चाहिए। जीवन समृद्ध होना चाहिए। उत्पातों के डर से प्रयत्न नहीं छोड़ना चाहिए।

जिस प्रकार लौकिक जीवन में प्रयत्नवाद आवश्यक है, उसी प्रकार आध्यात्मिक जीवन में भी प्रयत्नवाद होना ही चाहिए। योगसूत्र बताता है कि 'साधना' दीर्घकाल तक करनी पड़ती है। जीवन इहलोक का हो या पारमार्थिक हो, अपयश से

निराश होकर हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठना है। विज्ञानी एक-एक खोज के लिए सैंकड़ों बार प्रयोग करते हैं। बिना निराश हुए प्रयत्न करते रहते हैं, परिश्रम उठाते रहते हैं। वर्षों तक एक ही निदिध्यास रखते हैं। तब कहीं एकाध 'नई-खोज', नया अन्वेषण हो पाता है। परमार्थ में भी इसी प्रकार तपस्या करनी पड़ती है। अपने ही अंतरंग की थाह लेनी पड़ती है। यह यात्रा भी आसान नहीं होती। यह तो सबसे प्रदीर्घ अन्तर्यात्रा होती है। यह अन्तर्यात्रा बहुत लंबी भी हो सकती है, वर्षों तक अंधेरे में लड़खड़ाते-लुढ़कते चलते रहना पड़ सकता है। इतना ही नहीं, इस पारमार्थिक यात्रा में अनेक विघ्न-बाधाएँ आती हैं। साधक निराश हो जाते हैं। साधक मोहजाल में फँस जाते हैं, भ्रष्ट हो जाते हैं।

पारमार्थिक यात्रा करने वाले साधकों की तपस्या अनेक कारणों से भ्रष्ट होती है। तपस्वी अधःपतित होते हैं। तपस्या टूट जाती है। पर्वत की चोटी पर पहुँचने के लिए धीरे-धीरे चढ़ाई करते हुए और फिसल कर नींचे लुढ़क जाने के समान ही यह बात होती है। इस प्रकार तपोभंग के प्रसंग आते हैं। किन्तु जो इनसे निराश न होकर पुनः अपने प्रयत्न में जुट जाते हैं, जीत उन्हीं की होती है।

इस संदर्भ में विश्वामित्र का चरित्र सचमुच अत्यंत प्रेरणादायी है।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः

ऋषिवर्य वसिष्ठ जी ने इस तरह श्री राम के सामने पुरुषार्थ की महिमा गायी। प्रयत्नवाद से ही मानवी जीवन का श्री गणेश होना चाहिए। अपना दिन प्रारंभ होते ही हम अपने हाथों की ओर देखकर कहें ''कराग्रे वसते लक्ष्मीः। करमध्ये सरस्वती। करमूले तु गोविन्दः। प्रभाते करदर्शनम्''। भारतीय संस्कृति की यही सीख है कि दिन की शुरुआत कर रहे हो तो ध्यान में रखो कि लक्ष्मी तुम्हारे ही हाथों की उँगलियों पर वास करती है। हाँ, यह भी बात ध्यान में रखो कि सरस्वती (ज्ञान) और लक्ष्मी (वैभव) तभी टिकती हैं, जब नींव में 'गोविन्द' हो। 'गोविन्द' माने जिसका अपनी इन्द्रियों पर अधिकार हो। इसलिए अपनी इन्द्रियाँ अपने वश में रखो। ज्ञान प्राप्त करो, काम शुरु करो, फिर सारा वैभव तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा होगा।'' इसलिये निद्रात्याग करते समय प्रभातकालीन मंत्र का उच्चारण किया जाता है।

> ध्यान में रखो कि लक्ष्मी तुम्हारे ही हाथों की उँगलियों पर वास करती है। हाँ, यह भी बात ध्यान में रखो कि सरस्वती (ज्ञान) और लक्ष्मी (वैभव) तभी टिकती हैं, जब नींव में 'गोविन्द' हो। 'गोविन्द' माने जिसका अपनी इन्द्रियों पर अधिकार हो। इसलिए अपनी इन्द्रियाँ अपने वश में रखो।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति पुरुषार्थ की ही महिमा गाती है। बिस्तर से उठते ही पहला संस्कार पुरुषार्थ करने का ही करते हैं। आज के सुख-दुःख कल किए गए कर्मों के फल हैं, यानी कल का भविष्य, आज के कर्मों से निश्चित होने वाला है।

प्रयत्नों के लिए वैज्ञानिक आधार होना चाहिये-

एक छोटी-सी कथा सुनाता हूँ -

एक सात-आठ साल का लड़का था। उसका नाम था ज्ञानशत्रु। आपके ध्यान में यह बात आई ही होगी कि वह बुद्धू था। उसके माता-पिता कहीं बाहर गए थे, अंधेरा हो गया। उसने अंधेरे को हटाने के खूब प्रयत्न किए, पहले उसने अंधेरे को ढकेलकर बाहर निकालने की कोशिश की। अंधेरा नहीं गया। फिर जैसे फर्श पर गिरा हुआ पानी उलीच कर बाहर फेंकते हैं वैसे अंधेरे को उलीच कर फेंकने का प्रयत्न किया। अंधेरा नहीं गया। फिर उसने अंधेरे को सोटे से पीटना शुरु कर दिया कि मार के डर से भाग जाएगा। फिर भी अंधेरा वहीं का वहीं बना रहा। अंधेरे का परदा था, दूर होने का नाम ही नहीं ले रहा था। फिर उसे लगा कि परदा तो कैंची से काटा जा सकता है। वह कैंची लेकर अंधेरे के टुकड़े-टुकड़े करने लगा। अंधेरे के टुकड़े एक बोरे में भर कर बाहर फेंक आऊँगा। उसने परिश्रम तो

बहुत किया। अनेक प्रकारों से उसने कोशिश की। परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। इतने में उसके माँ-बाप आ गए। उन्होंने कहा, ''अरे बेटे, अंधेरे में क्यों बैठे हो?'' बेटे ने कहा, ''पिताजी मैंने बहुत परिश्रम किए; अनेक प्रकारों से प्रयत्न किए, परन्तु अंधेरा नष्ट नहीं हुआ। मेरे नसीब में ही अंधेरा लिखा हुआ है। मेरे नसीब में प्रकाश लिखा ही नहीं गया है।''

पिता ने एक मोमबत्ती लेकर जलाने के लिए कहा। मोमबत्ती जलने के बाद लड़के को अंधेरा ढूढ़ने को कहा। पर लड़के को अंधेरा कहीं भी दिखाई नहीं दिया। पिता ने कहा, ''सिर्फ परिश्रम किस काम? समझ से कर्म होना चाहिए। प्रयत्न अचूक और वैज्ञानिक होने चाहिए। तभी सफलता मिल सकती है। अनुचित दिशा में अवैज्ञानिक ढंग से परिश्रम उठाकर अपने भाग्य को कोसने में क्या तुक है?''

प्रत्येक कर्म की सफलता ज्ञान पर निर्भर होती है। इसीलिए ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं – ''कर्माचे डोळे ज्ञान। ते निर्दोष होआवे।'' कर्मों के चक्षु हैं ज्ञान। वे होने चाहिए निर्दोष। वैज्ञानिक ज्ञान के बिना कर्म सफल कैसे होगा? श्रमों का आधार शास्त्र का विज्ञान होना चाहिए।

ज्ञान की लौकिक एवं अलौकिक शाखा

भारतीय विचारधारा के अनुसार शास्त्र दो प्रकार के होते हैं! भूगोल, पदार्थ विज्ञान, रसायन, वनस्पति विज्ञान आदि लौकिक शास्त्र तथा भारतीय हठयोग, आयुर्वेद आदि भी लौकिक शास्त्र या विज्ञान हैं। धर्म-शास्त्र अलौकिक शास्त्र विज्ञान हैं। भौतिक शास्त्रों के अनुसार ही ये भी सुनिश्चित फल देने वाले शास्त्र हैं।

अलौकिक शास्त्र कुछ चिन्तन पर आधारित हैं जिसे भारतीय कर्म सिद्धान्त कहा जा सकता है। अपने जीवन का यश-अपयश, समृद्धि-दरिद्रता आदि सब इस 'कर्म-सिद्धान्त' पर आधारित हैं।

मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि जीवनकाल में यश, पुरुषार्थ याने प्रयत्नवाद पर निर्भर रहता है। प्रयत्न उचित दिशा में किए जाने चाहिए, उचित ज्ञान पर आधारित होने चाहिए, उचित साधन एवं उचित रीति एवं गति से किए जाने चाहिए।

परन्तु प्रत्यक्ष व्यवहार में हमें अलग ही दिखाई देता है। दो व्यक्तियों ने अलग-अलग दुकानें खोली; प्रयत्न, दिशा, साधन आदि को तथाकथित वैज्ञानिक कसौटियों पर परखा जाए, तो दोनों के प्रयत्न भी समान हैं; परन्तु व्यावहारिक यश समान नहीं दिखाई देता। ऐसा क्यों होता है ? किसी व्यक्ति को यश नहीं मिलता। वह फिसलता ही जाता है। किसी व्यक्ति को जन्मते ही अनुकूल स्थिति प्राप्त होती है, तो उसी मुहूर्त पर जन्मे दूसरे व्यक्ति को निरंतर संघर्ष ही करना पड़ता है। इसका क्या कारण हो सकता है?

धर्मशास्त्र का कर्मसिद्धान्त इस प्रकार है – **अपने भले-बुरे कर्मों का फल हमें अनिवार्यतः प्राप्त होता ही है।** इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में। जीवन में दो व्यक्तियों के कर्मफल में अन्तर दिखाई देता है। किसी को बिना कुछ प्रयत्न किए सब कुछ मिलता है, लाभ ही लाभ होता है, यह सब पिछले जन्म में किए हुए कर्मों के फलस्वरूप मिले 'प्रारब्ध' के कारण होता है। अपने ही कर्मों का फल हमारा 'प्रारब्ध' होता है। ईश्वर के दरबार में सर्वत्र 'न्याय' ही होता है। बिना किसी कारण के न किसी पर क्षोभ होता है, न कृपा होती है। पिछले जन्म में हमने जो कर्म किए थे अथवा इस जन्म में विस्मृत हो चुके हमारे कर्म 'अदृष्ट' कहलाए जाते हैं। 'अदृष्ट' का वाच्यार्थ है जो दिखाई नहीं देता। बीज मिट्‌टी में होता है, दिखाई नहीं देता, वह 'अदृष्ट' हो जाता है, परंतु आज नहीं तो कल, वह उग ही आएगा, यही है 'कर्मसिद्धान्त'।

आधुनिक विज्ञान स्थूल जगत् एवं उसकी गतिविधियों पर ही विचार करता है परंतु धर्मशास्त्र के अदृष्ट का विचार आधुनिक विज्ञान के दायरे में नहीं आता। परंतु धर्मशास्त्र में किया जाने वाला यह 'अदृष्ट' का विचार उतना ही वैज्ञानिक है।

जीवन एक निरंतर बहती धारा

है। 'जन्म के साथ जीवन शुरु होता है और मृत्यु के साथ समाप्त', यह बात सत्य नहीं है। इसी कारण तो गतजन्मों के कर्म 'अदृष्ट' बनकर इस जन्म में फलीभूत होते हैं। यह बात 'अदृष्ट' परिणामों को ध्यान में रखकर ही पहचाननी पड़ती है। इसी कारण हमें जीवन में 'विसंगति' दिखाई देती है। वास्तव में देखा जाए तो यहाँ विसंगत कुछ भी नहीं होता है।

अब मान लीजिए किसी का 'अदृष्ट' विपरीत है। गतजन्म में या इसी जन्म में कई वर्ष पूर्व, कुछ कर्म किए गए थे; जो बीज रूप में बोए जा चुके हैं - परंतु अभी तक उसमें अंकुर नहीं फूटे हैं अथवा अंकुर फूटे और अनचाहे फल हमारे आँचल में आ सके। अब इस 'अदृष्ट' पर प्रयत्नवाद कैसे हावी हो सकता है?

इस पर धर्मशास्त्रों ने मार्ग ढूँढ़ निकाला है। 'अदृष्ट' दिखाई नहीं देता, वैसे ही धर्मशास्त्र जो उपाय बताता है वह भी 'अलौकिक' होता है। स्थूल दृष्टि से देखने पर उन दोनों का कार्य-कारण भाव हमारे ध्यान में नहीं आता। धर्मशास्त्र के उपाय इस प्रकार होते हैं -

धर्मशास्त्र बताता है कि कुछ व्रत रखिए, जाप कीजिए, अपने कुलदेवता को भोग चढ़ाइए, उसका अभिषेक कीजिए, सप्तशती का पाठ कीजिए, नियमित रूप से इतने-इतने शुक्रवार अनशन कीजिए, चतुर्थी का व्रत रखिए - ये अथवा ऐसे ही कुछ उपाय बताए जाते हैं।

साधारण तथा लौकिक जीवन के यश-अपयश का और इन व्रतों का कुछ संबंध हमारे ध्यान में नहीं आता। परंतु कुछ लोग निष्ठा से ये व्रत रखते हैं। आधुनिक विचारकों की दृष्टि में यह अंध-श्रद्धा है।

> जीवन एक निरंतर बहती धारा है। 'जन्म के साथ जीवन शुरु होता है और मृत्यु के साथ समाप्त', यह बात सत्य नहीं है। इसी कारण तो गतजन्मों के कर्म 'अदृष्ट' बनकर इस जन्म में फलीभूत होते हैं। यह बात 'अदृष्ट' परिणामों को ध्यान में रखकर ही पहचाननी पड़ती है।

मेरा आपसे निवेदन है कि इस बात पर आप चाहें विश्वास रखें या ना रखें, यह आपकी अपनी स्वतंत्रता है, परंतु धर्मशास्त्र के आधारभूत कुछ चिंतन हैं, उन्हें जान लीजिए। धर्मशास्त्र यह मानता है कि हमें जितना स्थूल जगत् दिखाई देता है उससे अलग एक सूक्ष्म जगत् भी है और वह अधिक विशाल एवं प्रभावकारी है। हमारे भी मन है, बुद्धि है; पर दिखाई तो नहीं देते, न उन्हें स्पर्श किया जा सकता है, न उनकी कोई गंध है, न स्वाद है, फिर भी वे होते हैं। उनके अस्तित्व को हम अनुभव कर सकते हैं। उनसे और उनके कारण व्यवहार किया जा सकता है। धर्मशास्त्र कहता है कि इस स्थूल जगत् के पीछे कुछ विश्वशक्तियाँ कार्य करती हैं। उन विश्वशक्तियों को 'देवता' कहते हैं। उनसे संपर्क स्थापित किया जा सकता है।

एक समय ऐसा था कि मानव स्थूल जगत् के समान ही सूक्ष्म जगत् में भी प्रभावी रूप से विचरण करता था। देवी-देवताओं के साथ उसका नित्य ही संबंध बना रहता था। उसे सूक्ष्म जगत् कभी झूठा नहीं लगा था; क्योंकि वह तो उसका परिचित जगत् था। जीवन के व्यवहार में भी इन देवी-देवताओं से उसका संबंध होता रहता था। इंद्र, विष्णु, शिव, अप्सरा, नारद आदि देवी-देवगणों से मानव का नित्यसंबंध रहता था। किन्तु आज हम लोग बहुत ही स्थूल के स्तर पर आ गए हैं। इसी कारण इस सूक्ष्म दिव्य जगत् से हमारा संबंध टूट गया है। इतना ही नहीं, इस प्रकार का देवता-जगत होता है, इस बात पर भी हमारा विश्वास नहीं रहा है। परंतु वह जगत् है! आज भी है! कुछ महात्मा आज भी इस देव सृष्टि से संपर्क बनाए रखते हैं।

रामायण - महाभारत एवं पुराणों का काल छोड़ दीजिए। गत सदी की घटनाएँ ही देखिए अथवा संतों के चरित्र देखिए। ज्ञानदेव, नामदेव के साथ देवता बोलते थे। जनाबाई के लिए तो विट्ठल गोबर इकट्ठा करना, जमीन लीपना आदि काम करता था। जनी एक अनपढ़

गंवार, नामदेव के घर की नौकरानी थी। 'नौकरानी' शब्द भी उचित नहीं लगता; क्योंकि वह अपने काम का मोल नहीं लेती थी। 'दासी' कहना ठीक लगता है। वह क्या झूठ बोलेगी। और क्यों? झूठ बोलकर उसे कहाँ बड़प्पन पाना था? विट्ठल तो उसके साथ काम भी करता था, उसके थक जाने पर अपने पीतांबर से उसका पसीना भी पोंछता था। ये सारे संत-चरित्र तीन-चार सौ वर्ष पुराने हैं। परंतु श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, योगी अरविंद, टेंबे स्वामी - ये तो कल-परसों के लोग हैं। ये लोग देवी-देवताओं का दर्शन करते थे। उनसे बातें करते थे। अब इन्हें अंधश्रद्धा कहने का साहस कौन कर सकता है?

मुझे इतना ही कहना है कि हम बहुत ही स्थूल-विश्व में रहने लगे हैं। हम चेतन-सृष्टि, देवताओं का विश्व भूल चुके हैं।

इन देवताओं में 'अदृष्ट' को बदलने की सामर्थ्य होती है। देवता तो शक्ति-केन्द्र ही होते हैं। धर्मशास्त्र हमारे अदृष्टों को खोज़ता है। उसकी भी एक रीति होती है, पद्धति होती है। फिर अदृष्ट पर विश्वास कर सकें, ऐसे अलौकिक उपाय वे बताते हैं। ज्ञानदेव जी ने यानी हमारी 'माउली' ने, 'दैवं चैवात्र पञ्चमम्' - इस गीता वचन पर भाष्य करते समय 'दैव याने 'देवता - सहायता' ऐसा ही कहा है।

योगवासिष्ठकार जब प्रयत्नवाद या पुरुषार्थवाद का समर्थन करते हैं तो वे उसमें धर्मशास्त्र - प्रतिपादित उपायों का भी समावेश प्रयत्नवाद में ही करते है। "अरे लौकिक प्रयत्नों के साथ थोड़ा अलौकिक प्रयत्नों का भी सहारा लो।" माने क्या? तो "श्रीसूक्त का पाठ करो", आवर्तन करो, अनुष्ठान करो। उससे लौकिक प्रयत्नों को भी बल मिलेगा।

> एक समय ऐसा था कि मानव स्थूल जगत् के समान ही सूक्ष्म जगत् में भी प्रभावी रूप से विचरण करता था। उसे सूक्ष्म जगत् कभी झूठा नहीं लगा था; क्योंकि वह तो उसका परिचित जगत् था। हम लोग बहुत ही स्थूल स्तर पर आ गए हैं। इसी कारण इस सूक्ष्म दिव्य जगत् से हमारा संबंध टूट गया है।

(क्रमशः)

दीर्घायु होने के लिए करें दान

वाशिंगटन: अगर आप अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु होना चाहते हैं तो कुछ न कुछ दान करते रहने की आदत बनाइए। तीन विश्वविद्यालयों में पांच साल चले शोध का यही निष्कर्ष है। यूनिवर्सिटी ऑफ बफैलो के प्रधान शोध जांचकर्ता मइकल जे. पॉलिन का कहना है कि यह शोध एक महत्त्वपूर्ण योगदान है, खासकर इस समझ के संदर्भ में कि दूसरों को सहयोग देना किस तरह स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। साथ ही सहयोग देने वाले को यह तनाव के दुष्प्रभाव से बचाता है। अमेरिकी लोक स्वास्थ्य पत्रिका की खबर के मुताबिक, यूनिवर्सिटी ऑफ बफैलो में मनोविज्ञान के सहायक प्रोफेसर पॉलिन ने स्टोनी ब्रूक यूनिवर्सिटी और ग्रैंड वैली स्टेट यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर इस शोध को पूरा किया। इस शोध में ८४६ व्यक्तियों से तथ्य लिए गए हैं।

शोध में यह बात सामने आई है कि समाज से अलग-थलग रहने वाले और तनाव में जीने वाले लोग जल्द ही रुग्णता और मौत की ओर बढ़ने लगते हैं। बफैलो के एक बयान के अनुसार, पॉलिन का कहना है कि हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि दूसरों की मदद करने की आदत मददगारों को तनाव और मौत की ओर बढ़ने से रोकता है।

हनुमान जी के चित्र एवं प्रतिमाएं

हनुमान जी की अभी तक ज्ञात विश्व की प्राचीनतम प्रतिमा देवगढ़ (झांसी, उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुई है। हल्के लाल पत्थर से, गुप्त काल में पांचवी शती ईसवी में निर्मित यह फलक (पैनल) 'दशावतार' नामक मंदिर में प्रतिस्थापित था। यह और इस जैसे तमाम फलकों में रामकथा (इस मंदिर में राम एवं कृष्ण सहित विष्णु के दसों अवतार पत्थरों पर उत्कीर्ण थे) अंकित थी और उनमें कई जगह हनुमान हैं– पर हैं वे राम के अनुचर ही। यह मंदिर अब ध्वस्त हो चुका है, पर इसके दर्जनों फलक राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली तथा अन्य संग्रहालयों (विशेषकर राजकीय संग्रहालय, झांसी) में देखे जा सकते हैं। भीतर गांव (कानपुर) से उपलब्ध, पांचवीं शती की ईंटों का बना हुआ प्राचीनतम मंदिर भी गुप्तकालीन है इसमें भी राम के विविध क्रियाकलापों के साथ हनुमान हैं। एलोरा के प्रसिद्ध 'कैलाशनाथ' मंदिर (सातवीं शती ई.) तक में बजरंगबली राम के सेवक मात्र हैं। अभी तक एक स्वतंत्रत देवता के रूप में उनका चित्रांकन प्रारंभ नहीं हुआ। किन्तु पट्टडकल (दक्षिण भारत) के 'पापनाथ मंदिर' (आठवीं शती ई.) में सर्वप्रथम एक स्वतंत्र देवता के रूप में हनुमान जी के दर्शन होते हैं। इसके बाद अनके स्थलों पर हनुमान जी के स्वतंत्र मन्दिर/प्रतिमाएँ हमें उपलब्ध होती है इनमें चित्तौड़गढ़ (ग्यारहवीं शती), खजुराहों के विविध मंदिर (चंदेल शैली, बारहवीं शती), हम्पी (होयसाल शैली, १३वीं शती) में हनुमान जी की मूर्तियाँ विविध रूपों में विविध मुद्राओं में हमें उपलब्ध होती



है। ये सभी प्रस्तर प्रतिमाएँ ही हैं।

कांस्य की प्रतिमाओं में विशेष उल्लेखनीय है राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में दसवी शती ईसवी में निर्मित तंजौर की चोलकालीन प्रतिमा। इसमें हाथ जोड़े, विनम्र भाव से हनुमान जी खड़े हैं जैसे कोई भक्त हो। मुंह वानर का है, शेष समस्त शरीर मनुष्य का। दक्षिण भारत की कई कांस्य प्रतिमाओं में उन्हें 'पुस्तक' तथा 'वीणा लिये' हुए भी दिखाया गया है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि हनुमानजी ने 'संगीतपारिजात' नामक ग्रंथ भी रचा था; जो संगीतशास्त्र है। उन्हें 'सर्वविद्याधर', 'कलाधर', 'संगीताचार्य' भी कहा गया है। श्री शैलम् से एक कांस्य प्रतिमा (सत्रहवीं शती में निर्मित) प्राप्त हुई है जिसमें गणेश बांसुरी बजा रहे हैं तथा हनुमान मंजीरा। त्रिवेंद्रम संग्रहालय, केरल (सत्रहवीं शती ई.) में प्रदर्शित एक कांस्य मूर्ति में हनुमान बैठ कर स्वरचित 'हनुमानाष्टक' सुना रहे हैं। जोधपुर से जो कांसे के हनुमान मिले हैं उनके पांच सिर हैं। महाराष्ट्र में भी उन पशुओं जिन्हें दैवपद दे दिया गया है, के सिरों को एक साथ प्रदर्शित करते देखा गया है। जैसे घोड़ा (हयग्रीव), वराह (वराहवतार), अज (बकरा, दक्षप्रजापति), हाथी (गणेश), एवं वानर (हनुमान)।

चित्रकला में हनुमन्त :–

चित्रकला में सर्वप्रथम हनुमान जी का अंकन अकबर काल में किया गया जब 'रामायण' चित्रित की गई। भारत में विविध संग्रहालयों में मुगलकालीन चित्र संग्रहित हैं जिनमें हनुमन्त दर्शनीय हैं। कोचीन (केरल) के मत्तनचेरी राजमहल की दीवालों पर बने भित्तिचित्रों में पांच मुंह वाले हनुमान एक घड़ियाल पर सवार हैं। पांच सिर वाले हनुमान पैठण (महाराष्ट्र), जम्मू तथा कालीघाट शैली के चित्रों में भी अंकित है। लखनऊ

संग्रहालय में अवध शैली में (प्राविन्शियल मुगल स्टाइल) में 'रावण के दरबार में हनुमान' का मनोहरी चित्रण वाला चित्र प्रदर्शित है।

लखनऊ में ही अलीगंज नामक मुहल्ले का, गौतमी नदी के पास निर्मित हनुमान मंदिर १९वीं शती में अवध के नवाब मुहम्मद अलीशाह की बेगम ने बनवाया था। जिन्होंने एक पुत्र की मन्नत मानी थी। बेगम सभी दरगाहों पर गई; पर मनौती पूरी की कपिराज ने ही; सो शुक्रिया अदा करने के लिए बेगम ने यह ऐतिहासिक मंदिर बनवा दिया; जिसमें प्रतिवर्ष 'बुढ़वामंगल' का मेला लगता है – हिन्दू, मुस्लिम, स्त्री, पुरुष–बच्चे सभी लेट–लेट कर इस मंदिर तक पहुँचते हैं।

सोलहवीं शती में तुलसीदास ने जब 'हनुमानबाहुक' की रचना की जिसमें हनुमान के नाम पर निर्मित किए गए कई मंदिरों तथा उनकी कई प्रकार की मूर्तियों को उल्लेख है।

विदेशों में उपलब्ध प्रतिमाएँः–

हनुमान जी विदेश भी पहुँचे। नेपाल के पत्थर निर्मित मंदिर हैं जिसमें कपिराज के पांच सिर और दस हाथ हैं। इसी मंदिर में एक चार हाथ वाली प्रस्तर प्रतिमा भी है। जिसमें वे एक दानव को कुचल रहे हैं। नेपाल के कई चित्रों में भी पांच सिर और दस हाथ वाले हनुमन्त दृष्टव्य हैं। कम्बोडिया (कम्पूचिया) के दसवीं शती के प्रसिद्ध 'अंगकोरवट' मंदिर (जो विष्णु को समर्पित है तथा जिसे विश्व का विशालतम मंदिर माना जाता है) के द्वारपाल हनुमान हैं। भीमकाय प्रस्तर मूर्ति में हनुमान रक्षक के रूप में खड़े हैं। यहां के कई मंदिरों में इनका स्वतंत्र देवता के रूप में चित्रण है।

– डॉ. गायत्रीनाथ पंत

"अजपा जाप"

गीता के दसवें अध्याय में अपनी विभूतियों का उल्लेख करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा – 'यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि' अर्थात् जितने भी प्रकार के यज्ञ हैं; उनमें मैं 'जपयज्ञ' हूँ। अतः परमदेव परमात्मा से 'योग' स्थापित करने में 'जप' का विशेष महत्त्व है। 'जप' वाणी से जपा जाता है और वाणी के चार प्रकार 'अध्यात्म' में मान्य हैं – वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ति और परा। पहली में परमात्मा के प्रतीक नाम 'ॐ' का जप इस तरीके से किया जाता है कि उस उच्चारण को दूसरे व्यक्ति भी सुन सकें। मध्यमा के स्तर पर किए गये उच्चारण को केवल स्वयं ही सुन सकें; पास बैठा दूसरा व्यक्ति भी न सुन पाये। अग्रिम, 'स्टेज' पश्यन्ति की है; जिसमें जपकर्ता के होंठ तथा जीभ–कुछ भी–नहीं हिलते, केवल मानसिक उच्चारण होता है। जब तीनों 'सीढ़ियों' पर पकड़ मजबूत हो जाती है, तब सर्वोच्च स्तर आता है 'परावाणी' का। बिना विशेष प्रयास किए भी नाम–जप अन्तस की गहराइयों से श्वास–प्रश्वास के साथ निसृत होता रहता है और परमात्मा से अपने तार जुड़े रहने की अनुभूति बनी रहती है।

जपयज्ञ; जिसे भगवान् ने अपना स्वरूप बताया है, उसकी इसी उच्चतम स्थिति को 'योग' की भाषा में 'अजपा–जाप' कहते हैं। इस अवस्था को प्राप्त करने का श्रेयस्कर प्रयास जीवन रहते–रहते कर लेने में ही हमारे विवेक की सार्थकता है; क्योंकि यही वो साधन है जो कि हमें परमात्मा की सतत स्मृति बनाये रखने में मदद करता है और अन्त समय आने पर हम निर्भार होकर प्रस्थान कर सकते हैं।

– एस.एन.सरोज

गीता परिवार, पुणे

दि. २५/१२/२०१२ को गीता परिवार, पुणे की नई कार्यकरिणी का गठन हुआ।

अध्यक्ष : श्री. लक्ष्मण जोशी **उपाध्यक्ष :** श्री. श्रीपाद देशमुख

सचिव : सौ. संतोषी सत्यनारायण मुंदडा **सहसचिव :** श्री. शाम मणियार

कोषाध्यक्ष : श्री. श्रीवल्लभ व्यास

इसी बैठक में गीता परिवार के होनेवाले आगामी सालभरके कार्यक्रमों का उत्तरदायित्व कार्यकर्ताओं में बाँटा गया। सभी कार्यकर्ताओंनें पू. स्वामीजी का आशीर्वाद पाया।

संगमनेर से आई हुई स्वामी विवेकानंद प्रश्नमंजूषा प्रतियोगिता १२ जनवरी से १० फरवरी तक १५ स्कुलों में ली गई। यह आगे भी चलती रहेगी ऐसा निश्चय हुआ। इस प्रतियोगिता के लिए गीता परिवार, पुणे की मार्गदर्शिका सौ. अंजली तापडियाने स्वामी विवेकानंद चरित्र पर ४० मिनिटों की व्हिडिओ क्लिप बहुत ही अच्छी बनाई है। यह व्हिडिओ क्लिप स्कूलों में प्रतियोगिता लेने के पहले दिखाई गयी। इससे बच्चे बहुत ही खुश थे। इस प्रतियोगिता के लिए स्कूलों को 'स्मृतिचिन्ह', पहले पाँच नंबर के लिए पुस्तकों का सेट गिफ्ट और २५ बच्चों को प्रमाणपत्र दिया गया। इस सभी कार्य में सौ. संतोषी मुंदडा, सौ. संगीता मणियार, सौ. प्रतिभा तबीब, सौ. वेदिका कुलकर्णी, सौ. चित्रा बेलूरे, सौ. विजया कुलकर्णी, सौ. विद्या मंत्री, सौ. निर्मला गांधी, सौ. वृंदा देशपांडे, सौ. सुवर्णा सईकर, सौ. सूर्यकांता मानधने, श्री. प्रभाकर तबीब, डॉ. श्री. प्रकाश सोमण इन कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

गीता परिवार, पुणे द्वारा १० मार्च महाशिवरात्री से २५ मार्च हनुमान जयंती तक ज्यादा से ज्यादा हनुमान चालीसा पाठ हो और अपनी साधना बढती रहे इस हेतु हनुमान चालीसा पठण संख्या का कार्ड बनाया जाता है। हर कोई इसमें सहभागी हो सकता है। आप भी कार्ड मँगवा सकते हैं।

कार्ड हेतु संपर्क :- *श्री. सत्यनारायण मुंदडा - ९४२२०८०८१४*
श्री. शाम मणियार - ९८२२०८६३६७

शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता का घनपारायण

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के पूर्वछात्र एवं प्रतिष्ठान [illegible] स्थित सद्गुरु [illegible] महाराज वेदविद्यालय के वर्तमान अध्यापक वेदमूर्ति श्री. प्रशांतजी प्रकाशजी जोशी इनका शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता का घनपारायण दि. १५ अप्रैल १३ से दि. १५ मई १३ इस कालावधि में बेलबाग विष्णु मंदिर, [illegible] चौक, बुधवार पेठ, पुणे २ में आयोजित किया है। समय: प्रातः ८ से ११।

सभी वेदप्रेमियों से विनम्र अनुरोध है कि इस विरला स्वर्णिम अवसर पर पधार कर वेदश्रवण का लाभ लें एवं वेदनारायण की कृपा प्राप्त करें।

विनीत

वैदिक सम्राट कै. श्रीकृष्ण भट्ट गोडशे गुरुजी घनपारायण समिति, पुणे

गुरुकृपा

गुरु बिन नाहीं कोई आधार



मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मैं 'गुरुकृपा' ही मानता हूँ। इससे मुझे सदैव सम्बल रहता है। लगता है मैं अकेला नहीं हूँ। सदैव गुरुजी का हाथ मेरी पीठ पर है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि गुरुदेव के श्रीमुख से निसृत अमृत वचनों का चिन्तन करने एवं उन्हें अपने जीवन में उतारने वाले की कभी हार नहीं होती, उसकी कभी हानि नहीं होती।

सन् २००४ में मैंने सपरिवार बीड़ में महाराजश्री से अनुग्रह प्राप्त किया था। तब से मैं एवं मेरा परिवार गुरुचरणों में लीन रहता है। उनके उपदेशों को शिरोधार्य रखने से जीवन में आई आपदाएँ सदैव ही मुझे बिना हानि पहुँचाएँ पास से गुजर जाती हैं।

दो वर्ष पूर्व मेरा तबादला औरंगाबाद हो गया। मैं हर शनिवार को अपने घर आता हूँ। अभ्यासवश मैं अक्सर सफर में गुरु-मंत्र का जप करता रहता हूँ। ऐसे ही एक बार मैं औरंगाबाद से शनिवार को अपने घर जा रहा था। मेरी आँखे बन्द थी और अभ्यासवश मन ही मन जप चल रहा था। अचानक एक जोरदार आवाज और बड़े तगड़े झटके से मेरी आँख खुली। वहां का दृश्य देख कर मैं सन्न रह गया। कुछ देर तक तो कुछ समझ में ही नहीं आया कि क्या करूँ? मेरी बस और एक ट्रक की आमने सामने बड़ी भयंकर टक्कर हो गई थी। फलस्वरूप आधी बस और ट्रक आग की लपेट में आ गये। चारों ओर चीख-पुकार हो रही थी। लोग अपनी-अपनी जान बचाने हेतु खिड़कियों से कूद रहे थे। मुझे भी अचानक प्रेरणा हुई और मैं भी कूद पड़ा। काफी ऊँचाई थी तथा नीचे कांटे पड़े थे। मेरे न तो कोई चोट आयी और न कांटे या पत्थर ही चुभे।

एक ओर क्रंदन था, और दूसरी ओर लोगों में भारी क्रोध! बीड़ के पास हुए इस एक्सीडेन्ट में पाँच यात्रियों की तो तत्काल ही मृत्यु हो गई और कई घायल हुए थे।

मेरी बगल में ही बैठे एक यात्री को भारी चोट आयी। पर मेरा बाल भी बांका नहीं हुआ। सहयात्रियों की मैं जितनी भी मदद कर सकता था; की तथा बाद में पैदल ही एक घंटा चल कर अपने घर पहुँचा। घर में मेरी पत्नी एवं बड़ी बेटी बैचेनी से मेरी प्रतीक्षा में जाग रहे थे। मैंने जब उन्हें दुर्घटना का विवरण बताया तो वे पूज्य गुरुजी के चित्र के सम्मुख रोने लगे। हमें पक्का विश्वास है कि इस दुर्घटना से गुरु कृपा ने ही मेरी रक्षा की। मैं इसे अपना दूसरा जीवन मानता हूँ।

सच ही कहा है, 'गुरु बिन नाहीं कोई आधार'।

– सुधीर भालचन्द्र देशमुख
सहयोग नगर, बीड़ (महाराष्ट्र)
मो. ०९४२०६-५६६३७, ०२४४२-२२४७६०

श्रद्धा मनुष्य के जीवन में चमत्कार पैदा कर देती है। – पूज्यपाद

मणिपुर वेदविद्यापीठ उद्घाटन
मा. डॉ. रूपकिशोर शास्त्री जी के करकमलोंद्वारा

प.पू. संतश्री स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज की उपस्थिति में प.पू. महास्वामी स्वामी श्री जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज काँची कामकोटि पीठाधीश्वर के ६९ वें जगद्‌गुरु शंकराचार्य के आशीर्वाद से माघ शु. ११ (जया एकादशी) गुरुवार दि. २१ फरवरी, २०१३ को विश्वशांती महायज्ञ एवं सर्वशाखा वेदसम्मेलन कार्यक्रम के शुभमंगल वेदमंत्रों के मध्य "मणिपुर वेदविद्यापीठ, चार हजारे" का उद्‌घाटन माननीय डॉ. रूपकिशोर शास्त्रीजी, सचिव-महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग ने मुख्य अतिथि के रुप में किया।

संत श्री स्वामी गोविंद देव जी ने बताया - इस विद्यापीठ की स्थापना दिसंबर २०१२ गीता जयंती (मोक्षदा एकादशी) के दिन श्री गणेश पूजन तथा विधिवत् यज्ञ कर किया गया था। आज भी विश्वशांति महायज्ञ तथा सर्वशाखा वेदसम्मेलन के वेदमंत्रों के द्वारा किया जा रहा है।

श्री काँची कामकोटि पीठम, तमिलनाडू के श्री शंकर भगवत् पादाचार्य परम्परागत मूलमन्य सर्वज्ञपीठ जगद्‌गुरु श्री शंकराचार्य स्वामीजी श्रीमन्त संस्थान द्वारा भारत के पूर्वी सिंहद्वार मणिपुर में १४ फरवरी से १३ फरवरी तक विश्वशांती महायज्ञ एवं सर्वशाखा वेदसम्मेलन प.पू. सन्तश्री स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज द्वारा कराया गया।

२१ फरवरी को श्री लक्ष्मीनारायण श्री वेष्णुपचायतन मंदिर के प्रांगण में विश्वशांति महायज्ञ तथा सर्ववेदशाखा सम्मेलन शुरु करवाकर सन्तश्री मणिपुर वेद विद्यापीठ पधारे। वहाँ विद्यापीठ के भवन निर्माण हेतु प्राप्त भूमि की ओर वेद ज्योति सभा ने प्रस्थान किया। स्व. पदमजुंकार्की एवं स्व. जुनमाया कार्की की स्मृति में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे द्वारा स्थापित मणिपुर वेदविद्यापीठ के लिए १३३३२.५८ वर्गफीट भूमिदान प्राप्त हुआ है।

दानकर्ता गण श्री क्षनबहादुर, श्रीमती खिनमाया कार्की, स्व. देवी बहादुर की पत्नी, एवं उनके पारिवारिक सदस्य उपस्थित थे। वेदमंत्रों द्वारा सन्तश्री गोविन्ददेव गिरि जी, मणिपुर वेद विद्यापीठ के अध्यक्ष आचार्य राधागोविन्द जी, मा. श्री राधेश्यामजी चांडक, मा. श्री कृष्ण नारायण अग्रवाल (न्यासी), मा. श्री वासुदेव सिंहजी (न्यासी), श्री प्रेमनारायण अधिकारी (न्यासी) के करकमलों से भूमिपूजन हुआ। आचार्य श्री भवानी प्रसाद सुवेदी, आचार्य हेमन्त अधिकारी, आचार्य हेमलाल नैपाल, आचार्य रोशन गोयल, आचार्य पूरन अधिकारी ने भूमिपूजन कराया। वृन्दावन से पधारे वेदपाठी तथा मणिपुर के छात्र भी उपस्थित थे।

इसी समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सेनापति जिला के द्वारा 'भानुभक्त बालसंस्कार केन्द्र, चार हजारे' का भूमिजून भी किया गया।

सन्तश्रीजी ने कहा - ईशान्य भारत राष्ट्र और हिन्दु धर्म समाज का अभिन्न अंग है। इसकी उन्नति-समृद्धि के लिए भारत के सभी प्रदेश, हिन्दु धर्मसमाज अब सदा तत्पर रहेगा। मणिपुर वेद विद्यापीठ का उद्‌घाटन इसका प्रारंभ है। आप तन-मन लगाने के लिए समर्पित

भाव से खडे हो। मैं महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की ओर से आश्वासन देता हूँ धन की कमी नहीं होने देंगे। मणिपुर धर्म संस्कृति समाज की दृष्टी से भारत का अभिन्न अंग है। इस भारत के मणि की सुख, शांति उन्नति के लिए हम सब प्रतिबद्ध है। यहाँ से अब वेदज्ञान ज्योति दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में फैलेगी।

मुख्य अतिथि जी शास्त्री जी ने कहा, ''सांदीपनि वेदविद्या प्रतिष्ठान पूरी तरह से आपके साथ है। आज से मणिपुर वेदविद्यापीठ ने भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग-सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान से सम्बद्ध मान्यता प्रदान की जाने की मैं घोषणा करता हूँ। आचार्यों को मानदेय तथा छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाएगी तथा परीक्षा भी प्रतिष्ठान लेगा।

मणिपुर वेद विद्यापीठ में पूर्वोत्तर असाम, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, त्रिपुरा और उत्तरांचल प्रदेश तथा दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के छात्र भी लिए जाएंगे। नेपाली लोगों की आस्था वेदों के प्रति बहुत है तथा उनका जीवन बहुत गरीबी तथा अस्थिरता में बीत रहा है। अतः नेपाली छात्रों की रुचि वेदों तथा संस्कृत अध्ययन के प्रति बहुत है। अतः आप भी पूर्वोत्तर राज्यों से नेपाली छात्रों को चुनकर भेजें। दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में भी नेपाली फैलते जा रहे हैं। अतः उनके द्वारा वेदों की ज्योति दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में ले जाने का विचार हुआ है।

- डॉ. राधागोविंदजी थोंगम

आलंदी स्थित श्री ज्ञानेश्वरकन्या वात्सल्यधाम का दशकपूर्ति समारोह

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के माध्यम से मार्च २००३ से आलंदी के वारकरी विद्यार्थियोंके लिए माधुकरी प्रसाद वितरण का उपक्रम पूज्य श्रद्धेय स्वामीजीके कृपा आशीर्वादसे चलाया जा रहा है। प्रतिदिन ६०-७० विद्यार्थि तथा वारकरी साधकोंके टिफिन में भोजन प्रसाद दिया जाता है। अबतक सैंकडो वारकरी विद्यार्थी साधक इस माधुकरी योजनाका लाभ ले चुके हैं।

इस वर्ष मार्च २०१३ में वात्सल्य धाम दशकपूर्ति कर ११ वे वर्ष में प्रविष्ट होगा। इस उपलक्ष्य में २३ फरवरी के दिन पूज्य गुरुवर की पावन उपस्थिति में ज्ञानेश्वर कन्या वात्सल्यधाम आलंदी का दशकपूर्ति समारोह बडेही उत्साह के साथ निजानंद महाराज वेदविद्यालय आलंदी में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेवने संत साधकों के साथ इस योजनाके संचालक डॉ. पांडुरंगजी बाहेती (काकाजी) तथा व्यवस्थापक श्री. चंद्रकांतजी इंदलकर का विशेष सम्मान किया।

उपासनाएँ सफल क्यों नहीं होती?

देवी-देवता जनसाधारण की उपासना के केन्द्र होते हैं। माना जाता है कि पूजा, अर्चा, जप, स्तुति, दर्शन, प्रसाद आदि कृत्यों के माध्यम से भगवान् अथवा देवताओं को प्रसन्न किया जा सकता है और उनसे इच्छानुसार वरदान प्राप्त करके अभीष्ट सुख-सुविधाओं से लाभान्वित हुआ जा सकता है।

यह मान्यता कई बार सही साबित होती है, कई बार गलत। प्राचीनकाल में कितने ही साधकों ने कठिन तपस्याएँ करके अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की। वे स्वयं इतने समर्थ हुए कि दूसरों को अपने तप का अंश देकर लाभान्वित कर सके। पुराण-साहित्य ऐसी ही घटनाओं से भरा पड़ा है, जिनमें चर्चा के प्रमुख पात्रों में से अधिकांश की सामर्थ्य देवप्रदत्त थीं। ऋषियों के जीवन चरित्रों में- अधिकांश में ऐसे वर्णन मौजूद हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि उनमें कितनी ही विशेषताएं थीं जिनको उन्होंने तप-साधना के द्वारा देवताओं से अथवा सीधे भगवान् से पाया था। ऐसे अगणित प्रमाण विद्यमान हैं, जिनसे साधना के फलस्वरूप अनेक साधको ने अपने व्यक्तित्वों में ऐसी विशेषताएँ उत्पन्न कीं जो सर्वसाधारण के लिए सुलभ नहीं होती। अभी भी ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं, जो उपर्युक्त तथ्य को अपने अद्भुत कर्तृत्व द्वारा सही सिद्ध कर रहे हैं।

साथ ही यह भी देखने में आता है कि घर-बार छोड़कर पूरा समय देवाराधना में लगाने वाले व्यक्ति और भी अधिक गई-गुजरी स्थिति में चले गये। न उन्हें सुख मिला; न शान्ति। स्वास्थ्य से लेकर सम्मान तक कोई भी सम्पदा उनके पास नहीं थी। विवेक से लेकर आत्मबल तक कोई प्रतिभा-विशेषता उन्हें उपलब्ध नहीं हुई। वरन् उनकी स्थिति हर प्रकार से बिगड़ती ही चली गई। यह स्थिति मन को असमंजस में डालती है।

> व्यक्ति की अपनी निष्ठा, श्रद्धा, भावना के अनुरूप ही यह देव अंश समर्थ बनते हैं या दुर्बल रहते हैं। एक साधक की निष्ठा में गहनता और व्यक्तित्व में प्रखरता हो, तो उसका देवता समुचित पोषण पाकर अत्यन्त समर्थ दृष्टिगोचर होगा और साधक की सहायता करेगा। दूसरा साधक यदि आत्मिक विशेषताओं से रहित हो तो उसके अंतरंग में अवस्थित देव-अंश पोषण के अभाव में भूखा, रोगी, दुर्बल बनकर एक कोने में कराह रहा होगा। 'पूजा' भी नकली दवा की तरह भावनारहित होने से उस देवता को परिपुष्ट नहीं बना सकेगी और विधिपूर्वक मंत्रजप आदि करते हुए भी साधक समुचित लाभ नहीं उठा सकेगा।

एक को लाभ, एक को हानि क्यों?

एक-सी प्रक्रिया का अवलम्बन करने पर भी एक को लाभ एक को हानि, ऐसा क्यों? एक को सिद्धि दूसरे के हाथ निराशा क्यों? वही देवता, वही मंत्र, वही विधि। एक को फलित तथा दूसरे को निष्फल, इसका क्या कारण है? यदि उपासना अंध-विश्वास है, तो फिर कितने ही लाभान्वित क्यों होते हैं? यदि यह सत्य है तो उससे कितनों को ही निराश क्यों होना पड़ता है? जल हर किसी की प्यास बुझाता है, सूरज हर किसी को गर्मी-रोशनी देता है, फिर फलश्रुति में विरोधाभास क्यों?

विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि देवता या मंत्रों में जितनी अलौकिकता दृष्टिगोचर होती है, उससे लाभान्वित हो सकने की पात्रता साधक में कितनी है? उपासनात्मक कर्मकाण्डों की मात्र लकीर पीटना ही पर्याप्त नहीं है। तेज धार की तलवार में सिर काटने की क्षमता है, इसमें सन्देह नहीं, पर वह क्षमता सिद्ध हो, इसके लिए चलाने वाले का भुजबल, साहस एवं कौशल भी आवश्यक है। बिजली में शक्ति है; पर उससे लाभान्वित होने के लिए आवश्यक यन्त्र भी चाहिए। उनके अभाव में बिजली का उपयोग व्यर्थ ही नहीं; अपितु अनर्थ-मूलक भी बन जाता है।

प्रश्न पात्रता का

स्वाति के जल से मोती वाली सीपें ही लाभान्वित होती हैं। अमृत उसी को जीवन दे सकती है, जिसका मुँह

खुला हुआ है। प्रकाश का लाभ आँखों वाले ही उठा सकते हैं । इन पात्रताओं के अभाव में लाभ नहीं उठाया जा सकता। उपासना के संबंध में भी यही बात लागू होती है। घृत सेवन का लाभ वही उठा सकता है, जिसकी पाचनक्रिया ठीक हो। देवता और मंत्रों का लाभ भी वे ही उठा पाते हैं, जिन्हेंने अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत कर लिया है। औषधि का लाभ उन्हें ही मिलता है, जो बताये हुए अनुपात के साथ-साथ पथ्य का भी ध्यान रखें। अतः पहले आत्म-उपासना फिर देव-उपासना की शिक्षा ब्रह्मविद्या के विद्यार्थियों को दी जाती रही है। लोग उतावली में मंत्र, देवता, भगवान् और भक्ति के पीछे पड़ जाते हैं, इससे पहले आत्मशोधन की आवश्यकता पर ध्यान ही नहीं देते। फलतः उन्हें निराश ही होना पड़ता है। बादल कितना ही जल क्यों न बरसाएं, पर जिसके पास जितना बड़ा पात्र है, उसे उतना ही मिलेगा। देवता और मंत्रों से लाभ उठाने के लिए भी पात्रता आवश्यक है।

गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से, आचरण और चिंतन की दृष्टि से यदि मनुष्य उत्कृष्टता और आदर्शवादिता से अपने को सुसम्पन्न कर लें तो उनके कषाय-कल्मषों की कालिमा हट सकती है और अन्तःकरण निर्मल बन सकता है। ऐसा व्यक्ति, उपासना का समुचित लाभ उठा सकता है। जब तक यह पात्रता न हो तब तक साधना के पुरुषार्थ से कुछ भौतिक लाभ भले ही मिल जाएं, देवत्व का एक कण भी प्राप्त न होगा और आसुरी भूमिका पर कोई सिद्धि मिल भी जाए, तो अन्ततः उसके लिए ही घातक सिद्ध होगी। असुरों की साधना और उसके आधार पर मिली हुई सिद्धियों से उनका सर्वनाश ही हुआ। अध्यात्म विज्ञान का समुचित लाभ लेने के लिए साधक का अन्तःकरण जितना निर्मल होगा, उतनी ही उसकी उपासना फलीभूत होगी। धुले हुए कपड़े पर रंग आसानी से चढ़ता है, मैले पर नहीं। निर्मल व्यक्तित्वसम्पन्न साधक उपासना का आशाजनक लाभ सहज ही प्राप्त कर सकता है।

वह सर्व व्यापक है

भगवान् और देवता कहाँ है? किस स्थिति में है? उनकी शक्ति कितनी है? सही निष्कर्ष यह है कि दिव्य चेतनसत्ता निखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त है और पग-पग पर उनके समक्ष जो अणु-गति जैसी व्यस्तता के कार्य प्रस्तुत हैं, उन्हें पूरा करने में संलग्न हैं। उनके समक्ष असंख्य कोटि प्राणियों की, जड़-चेतन की बहुमुखी गतिविधियों को संभालने का विशालकाय काम है, सो वे उसी में लगी रहती हैं। एक व्यवस्थित नियम और क्रम उन्हें इन ग्रह-नक्षत्रों की तरह कार्य में संलग्न रखता है। व्यक्तिगत सम्पर्क में घनिष्ठता रखना और किसी की भावनाओं में उतार-चढ़ाव की बातों पर बहुत ध्यान देना उनके लिए समग्र रूप से सम्भव नहीं। वे ऐसा करती तो हैं, पर अपने एक अंश प्रतिनिधि के द्वारा दिव्य सत्ताओं ने हर मनुष्य के भीतर उसके स्थूल-सूक्ष्म-कारण-शरीरों में अन्नमय कोश, मनोमय प्राणमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय कोश जैसे आवरणों में अपना एक-एक अंश-स्थापित किया हुआ है और वह अंश प्रतिनिधि ही उस व्यक्ति की इकाई को देखता-सँभालता है।

जैसी सेवा वैसी मेवा!

व्यक्ति की अपनी निष्ठा, श्रद्धा, भावना के अनुरूप ही यह देव अंश समर्थ बनते हैं या दुर्बल रहते हैं। एक साधक की निष्ठा में गहनता और व्यक्तित्व में प्रखरता हो, तो उसका देवता समुचित पोषण पाकर अत्यन्त समर्थ दृष्टिगोचर होगा और साधक की सहायता करेगा। दूसरा साधक यदि आत्मिक विशेषताओं से रहित हो तो उसके अंतरंग में अवस्थित देव-अंश पोषण के अभाव में भूखा, रोगी, दुर्बल बनकर एक कोने में कराह रहा होगा। 'पूजा' भी नकली दवा की तरह भावनारहित होने से उस देवता को परिपुष्ट नहीं बना सकेगी और विधिपूर्वक मंत्रजप आदि करते हुए भी साधक समुचित लाभ नहीं उठा सकेगा।

हमारा स्वभाव और अन्तरात्मा

विराट ब्रह्म महान होते हुए भी, व्यक्ति की इकाई में उस प्राणी की परिस्थिति में पड़ा हुआ लगभग उससे थोड़ा ही अच्छा बनकर रह रहा होगा। अन्तरात्मा की पुकार निश्चित रूप से ईश्वर की वाणी है; पर वह हर अन्तःकरण में समान रूप से प्रबल नहीं होती। सज्जनों के मस्तिष्क में मनोविकारों का एक झोंखा घुस जाए, तो भी उनकी अन्तरात्मा प्रबल प्रतिकार के लिए उठेगी और ऐसी बुरी तरह धिक्कारेगी कि पश्चात्ताप ही नहीं अपितु प्रायश्चित्त किये बिना चैन न

पड़ेगा। इसके विपरीत दूसरा व्यक्ति जो क्रूरकर्मी है, उसकी अन्तरात्मा यदाकदा बहुत हलका-सा प्रतिवाद ही करेगी और वह व्यक्ति उसे आसानी से उपेक्षित करता रहेगा। ईश्वर दोनों के हृदय में है। दोनों की अन्तरात्मा की प्रकृति एक सी है- दोनों ही अपना कर्तव्य निबाहती हैं; पर दोनों की स्थिति सर्वथा भिन्न है। सज्जन ने सत्प्रवृत्तियों को पोषण देकर अपनी अन्तरात्मा को निर्मल बनाया है, उसकी प्रबलता कभी शाप-वरदान के चमत्कार भी प्रस्तुत कर सकती है। पर दूसरे ने अपनी आत्म को निरन्तर पददलित करके, उसे भूखा रखकर दुर्बल बना रखा है, वह न तो प्रबल प्रतिरोध कर सकती है और न कभी उसके द्वारा ईश्वर से की गई पुकार कुछ प्रतिफल निकल सकता है।

साधना बिना फल नहीं

विराट ब्रह्म सर्वव्यापी, साक्षी-द्रष्टा, नियन्ता, कर्ता, हर्ता, सत्-चित्-आनन्द आदि विभूतियों से सम्पन्न है। देवशक्तियाँ भी अपनी सीमित परिधि के अनुरूप उठ खड़ी होकर होती है सहायता कर सकने में समर्थ। द्रौपदी के कृष्ण अलग थे, वे एक पुकार सुनते ही दौड़कर आये। हमारे कृष्ण अलग हैं। वे लगभग लंघन में पड़े रोगी की तरह हैं। पुकार सुनने और सहायता के लिए खड़े होने की सामर्थ्य उनके हाथ-पैरों में है नहीं, फिर वे प्रार्थना का क्या उत्तर दें?

अध्यात्म विद्या के तत्त्वदर्शियों ने इस तथ्य को छिपाया नहीं है। उन्होंने सदा यह कहा है कि इस विराट ब्रह्म में जो कुछ दिव्य, महान, पवित्र, प्रखर है; उसका एक अंश हर व्यक्ति के भीतर विद्यमान है। जो चाहे, उसे ठीक तरह सँजोने-सँभालने में लग सकता है और उन मणिमुक्ताओं से अपने जीवन-भाण्डागार को भरापूरा कर सकता है। उपेक्षा करने से वे निरर्थक ही बनकर रह जाएँगे। हर किसी के मस्तिष्क में गणेश विद्यमान है। जो बुद्धि-विकास की साधना करके अपने गणेश को परिपुष्ट बना लेगा, वह विद्वान बनकर अनेक विभूतियों के वरदान प्राप्त करेगा। जो अपने गणेश की जड़ों में पानी नहीं देगा, उनके विनायक भगवान् सूखे, मूर्च्छित एक कोने में पड़े होंगे। लड्डू खीर खिलाने, स्तोत्र पाठ करने पर भी वे कुछ सहायता न कर सकेंगे। बुद्धिमान और विद्वान बन सकना सम्भव न होगा। हर किसी की भुजाओं में हनुमान का निवास है। व्यायाम करने वाले संयमी, ब्रह्मचारी लोग बजरंगबली के भक्त प्रमाणित हो सकते हैं, पर जिनने अपने असंयमी और भ्रष्ट आचरण से हनुमान जी को पीड़ित-प्रताड़ित करने में कमी नहीं छोड़ी, उनका हनुमान चालीसा पाठ कुछ ज्यादा कारगर नहीं होगा, वे आरोग्य का वरदान अपने रुग्ण हनुमान से कैसे प्राप्त कर सकेंगे?

उपासना बाजीगरी नहीं है

बालबुद्धि, उतावले और अदूरदर्शी लोग ही उपासना को जादूगरी, बाजीगरी जैसी कोई चीज मानकर चलते हैं। उनकी कल्पना किन्हीं ऐसे देवताओं की होती है, जो स्तुति, जप, पूजा, प्रसाद के तनिक से प्रलोभन पर ललचाए जा सकते हैं और उनसे इन नगण्य उपहारों के बदले मनचाहे लाभ उठाये जा सकते हैं। अधिकांश पूजा-उपासना में संलग्न लोगों की मनोभूमि इसी बच्चे जैसे स्तर की होती है। वे विधि-विधानों, कर्मकाण्डों या उपहारों का ताना-बाना बुनते रहते हैं और उसी टंटघंट में अपना उल्लू सीधा करने की तरकीबें भिड़ाते रहते हैं। तथाकथित भक्तों की मण्डली इसी स्तर का प्रमाण भगवान् के सामने प्रस्तुत करते हैं या कुछ और खेल खड़ा करके भगवान् की आँखों में धूल झोंककर अपने असली स्वरूप को छिपाते हुए भक्त को मिलने वाले लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। वस्तुतः न भगवान् इतने भोले हैं, न कोई देवता इतना सरल, न कोई मंत्र ऐसा है जिसे कुछ बार जप-रटकर मनचाहा लाभ उठाया जा सके। उपासना का एक सर्वांगपूर्ण विज्ञान है। अध्यात्म विद्या को एक समग्र विज्ञान ही कहना चाहिए। उसके नियम और प्रयोजनों को समझ कर तदनुकूल चलने से ही लाभान्वित हुआ जा सकता है। यदि यह तथ्य लोगों ने समझा होता तो अध्यात्म मार्ग की देहरी पर पैर रखते ही पहला प्रयोग अपने अन्तरंग में मूर्छित, पददलित, विभुक्षित, मलिन पड़े हुए इष्टदेव को सँभालने-सँजोने का प्रयत्न किया होता। उन्हें समर्थ और बलवान बनाया होता। इस प्रथम प्रयोजन को पूरा करने के बाद मंत्र, जप, उपासना, पूजा, स्तोत्र आदि का चमत्कार देखने का दूसरा कदम उठाया गया होता तो निःसन्देह हर उपासक को आशाजनक सफलता मिली होती और किसी को भी निराश होने, अविश्वासी बनने या असमंजस में पड़ने का अवसर न आता। ■

सीख

कृष्ण जैसा गुरु चाहिये तो पहले अर्जुन जैसे शिष्य बनिये!



भारतीय परंपरा में सद्‌गुरु की महिमा स्थान-स्थान पर गाई गई है। 'माउली' (ज्ञानेश्वर जी) का तो कहना है कि सद्‌गुरु की आवश्यकता ज्ञानोत्तर भी बनी ही रहती है। गुरुकृपा की आर्द्रता न हो तो ब्रह्मज्ञान भी शुष्क हो जाएगा, सूख जाएगा। सद्‌गुरु के श्रीमुख से निःसृत शब्द 'मंत्र' बन जाता है। यह मंत्र साधक को साधना में दृढ़ करता है। गुरु के मंत्र की सामर्थ्य का आधार न हो तो साधक का ज्ञान फिर से धुंधला पड़ सकता है, मलिन हो सकता है। ज्ञान प्राप्त होने पर भी चित्त को शांति प्राप्त नहीं होती।

ऐसा क्यों होता है? शास्त्र क्या बताता है? उपनिषद का महावाक्य क्या है? 'तत् त्वम् असि।' वह परब्रह्म तुम ही हो। – यह वाक्य हम सैंकड़ों बार सुनते आये हैं। सारी उपनिषदें, सारा वेदान्त क्या हम नहीं जानते? फिर भी हम नदी में पड़े पत्थर के समान अंदर से शुष्क ही होते हैं। आर्द्र नहीं होते। पानी ऊपर से बह जाता है, अंदर जरा भी नहीं रिसता। इसी के लिए सद्‌गुरु की आवश्यकता होती है। सद्‌गुरु क्या करते हैं? किताबों से कुछ अलग बताते हैं क्या? नहीं, जो किताबों में, ग्रंथों में लिखा है, वही बताते हैं। शब्द वे ही होने पर भी ग्रंथों के शब्दों में मंत्र की सामर्थ्य नहीं होती पर सद्‌गुरु के श्रीमुख से आए शब्द 'मंत्र' बनकर आते हैं। सद्‌गुरु की तपस्या, ज्ञान, भाववृत्ति, अनुभूति या यों कहें एक अलौकिक सामर्थ्य लेकर वे शब्द आते हैं। इसी कारण तो वे इतने प्रभावशाली होते हैं। इसीलिए सद्‌गुरु का होना अत्यावश्यक होता है।

सद्‌गुरु का उपदेश शब्दों से ही होगा, सो बात नहीं। श्री गुरु का स्पर्श, श्रीगुरु का दृष्टिपात भी वह कार्य कर सकता है। इतना ही नहीं, श्री गुरु लौकिक दृष्टि से दूर होने पर भी, जब शिष्य परिपक्व बनने लगता है तो दूर से ही, केवल अपने संकल्पभर से वे शिष्य को दिव्य अनुभूति करा सकते हैं।

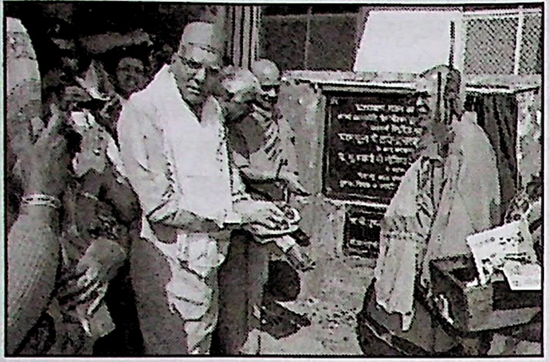
किन्तु यह भी सत्य है कि सद्‌गुरु चाहे जितना बड़ा हो, चाहे जितना तपस्वी हो, फिर भी वह किसी भी ऐरे गैरे शिष्य में परिवर्तन नहीं ला सकता। उस परिवर्तन के लिए शिष्य की भी कुछ तैयारी होनी चाहिए। उसकी भी कुछ साधना होनी चाहिए। यदि योगवासिष्ठकार की भाषा में कहना हो तो कह सकते हैं कि कोई किसी का उद्धार नहीं कर सकता। श्रीगीता जी भी यही कहती हैं कि **'हमें ही अपना उद्धार करना होता है।'**

परमहंस हों; वे सभी का उद्धार नहीं कर सकते। उसके लिए शिष्य की पात्रता होना भी आवश्यक है। श्रीरामकृष्ण परमहंस को अनेक उच्च कोटि के शिष्य मिल गए थे; परन्तु उनके अपने नजदीक के रिश्तेदार 'हृदयनाथ'-हृदय-का वे उद्धार नहीं कर पाए। कारण, उसकी वैसी पात्रता ही नहीं थी। अतः योगवासिष्ठकार प्रतिपादित करते हैं कि गुरुप्रतीति के साथ-साथ शिष्य पर भी अपनी पात्रता विकसित करने का एक बड़ा दायित्व होता है।

अतः किसी ने ठीक ही कहा है, "कृष्ण जैसा गुरु चाहिये तो पहले स्वयं में अर्जुन जैसी सामर्थ्य एवं कर्तव्य बोध उत्पन्न करें। फिर देखिये, इस भवसागर को पार करने हेतु कृष्ण जैसे गुरु आपको अवश्य मिलेंगे।"

ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ, पुष्कर में

वैदिक मंत्र शास्त्र अनुसंधान मन्दिर में मृत्युंजय महादेव प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न



पुष्पलता राठी छात्रावास का उद्घाटन

महर्षि वेद व्यास प्रतिष्ठान पुणे द्वारा संचालित ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ, पुष्कर में वैदिक छात्रों के उपयोग हेतु नव निर्मित वैदिक मंत्र शास्त्र अनुसंधान मन्दिर में स्थापनार्थ मृत्युंजय महादेव, भगवती पार्वती, सिद्धिविनायक गणेश, भगवती गायत्री एवं हनुमान जी आदि विग्रहों की प्राणप्रतिष्ठा एवं स्थापना का पंचदिवसीय महोत्सव दिनांक १५ फरवरी को कांची कामकोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनंत श्री विभूषित प.पू. महास्वामी की जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज के कर कमलों से प्रातः ८ बजे एवं ११ बजे पुष्पलता आनन्द राठी छात्रावास का उद्घाटन कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ।

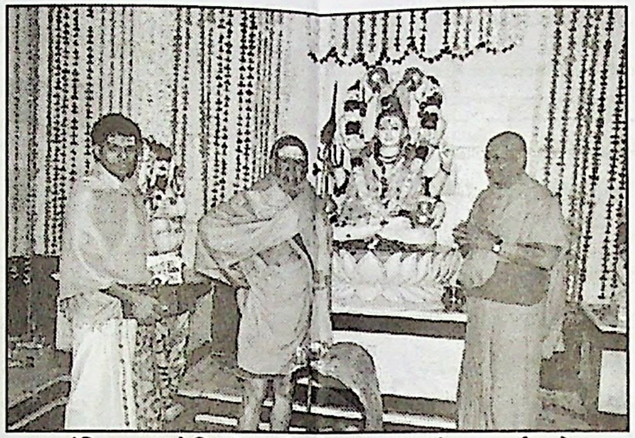
इस अवसर पर प.पू. महास्वामीजी महाराज ने कहा कि वर्तमान में वैदिक ज्ञान का ह्रास जिस तीव्र गति से हो रहा है वह भारतीय संस्कृति एवं अस्मिता की दृष्टि से चिन्तनीय है। आपने चेतावनी दी कि वेद बचेगा तभी देश बचेगा। इस सन्दर्भ में आपने आचार्य स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज द्वारा की जा रही वेदसेवा को अतुलनीय बताया। आज देश में आसेतु हिमालय आप द्वारा गुरुकुल पद्धति से पूर्णतः निःशुल्क रूप से संचालित २२ वेद विद्यालयों को संस्कृति एवं वेद रक्षणार्थ एक आशा की किरण बताया तथा कहा कि देश में अन्य स्थानों पर भी आपका अनुसरण किया जाना चाहिये।



मंच पर प.पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज के साथ गोकर्ण पीठाधीश्वर ज.गु. स्वामी राघवेंद्रजी महाराज, साध्वी मंदाकिनीजी तथा नानीबाई का माहेरा कथा वाचक राम स्नेही संत श्री राम प्रसादजी महाराज

देश में प्रथम बड़ा मंत्र अनुसंधान मंदिर पुष्कर में स्थापित

मृत्युंजय महादेव



कांचिकाम कोटी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती एवं प.पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज

इस पंचदिवसीय समारोह में मुख्य यजमान श्री रामेश्वरजी काबरा एवं यज्ञ के अन्य यजमान सर्व श्री सुरेशजी राठी, अरुण जी अग्रवाल, संदीप जी झंवर एवं महेन्द्रजी काबरा थे। प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम में रोजाना प्रातः८ बजे से १२ एवं मध्याह्न १.३० से ५ बजे तक पूरे वैदिक विधिविधान से हवन-पूजन सम्पन्न हुए। दिनांक ११ फरवरी की शाम पंचपीठाधीश्वर पूज्य आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज (जयपुर) ने भगवान् शिव की महिमा पर प्रकाश डाला। इसी महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित तीन दिवसीय (११ से १३ फरवरी) नानी बाई के मायरे की कथा रामस्नेही संत श्री रामप्रसाद जी महाराज ने की।

स्थापित देवता पूजन, रुद्र स्वाहाकार, मूर्ति स्तवन, लोकपाल हवन, देवतायाग, धान्याधिवास हुआ व देव विग्रहों का १०८ कलशों से जलाभिषेक किया गया तथा मुख्य यजमान श्री रामेश्वरलाल जी काबरा एवं सर्वश्री आनन्द जी राठी, रामदास जी अग्रवाल, संदीप जी झंवर, अशोक जी कालानी, अरुण जी अग्रवाल, रामकुमार जी भूतड़ा, सुनील जी मून्दड़ा एवं श्याम सुन्दर जी बिड़ला द्वारा गोकर्ण पीठाधीश्वर राघवेंद्र स्वामीजी का पाद्यपूजन किया गया जिसमें सारे न्यासीगण भी उपस्थित थे।

प्रेरणाश्रोत



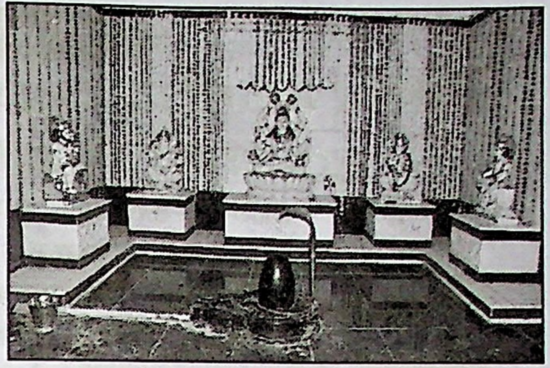
प.पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज

१२ फरवरी, २०१३ को दोपहर के समय गोकर्ण पीठाधीश्वर राघवेंद्र स्वामीजी ने अपने प्रवचन में विद्यार्थियों की उन्नति के लिए उन्हें प्रेरणा दी तथा साध्वी मन्दाकिनीजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि व्यक्ति को किस प्रकार आदर्श जीवन यापन करना चाहिए।

१३ फरवरी, २०१३ को अपराह्न में आयोजित प्रवचन माला के अन्तर्गत प्रसिद्ध वेदविज्ञ एवं उद्भट विद्वान डॉ. दयानन्द जी भार्गव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि मानव के जीवन का लक्ष्य क्या है एवं उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

प.पू. स्वामी श्रीगोविंददेव गिरिजी महाराज ने डॉ. दयानन्दजी भार्गव का परिचय देते हुए उन्हें सम्मानित किया।

१४ फरवरी, २०१३ को अपराह्न में प.पू. स्वामी श्रीगोविंददेव गिरिजी महाराज द्वारा शिव माहात्म्य पर प्रवचन दिया गया तथा गिरिराज मित्र मण्डल परिवार कोटा द्वारा अनुपम भजन संध्या की प्रस्तुती दी गई।



मृत्युंजय महादेव मन्दिर का गर्भगृह

१५ फरवरी, २०१३ को प्राण प्रतिष्ठा, देवता संस्कार, राजोपचार पूजा, पूर्णाहुति, महाआरती, अवभृथ स्नान व कांची कामकोटि पीठाधीश्वर महास्वामी श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज व प.पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज द्वारा भगवान मृत्युंजय महादेव मंदिर व पुष्पलता आनंद राठी छात्रावास का उद्घाटन किया गया।

समारोह में प.पू. स्वामी श्रीगोविंददेवगिरिजी महाराज द्वारा कांची कामकोटि पीठाधीश्वर महास्वामी श्री जयेन्द्र सरस्वती की उपस्थिति में पं. हरदेव जी शर्मा के नेतृत्व में मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम को सफलता पूर्वक सम्पन्न करने हेतु पं. हरदेव जी शर्मा समेत विद्यापीठ के प्राचार्य श्री श्रीराम जी जोशी, आचार्य वैभवजी जोशी, भवानीशंकर जी पाराशर व श्री रेणुकादास जी पाठक, श्री महेशजी नंदे एवं श्री केशवजी अयाचित आदि को सम्मानित किया गया।



मंत्र अनुसंधान मंदिर

गीता परिवार – समाचार

देशभर में स्वामी विवेकानंद की १५० वीं वर्षगाठ का उत्सव एवं नियमित शिविर सम्पन!



हजारों वर्षों की परतंत्रता से शापित हिन्दू समाज और हिन्दुस्तान को नव-चैतन्यत्व प्रदान करने वाले और समाज के खोये आत्मविश्वास को जगाने वाले महान देशभक्त संन्यासी के प्रति राष्ट्र नतमस्तक है। वर्ष २०१२-१३ स्वामी विवेकानंद की १५०वीं वर्षगाँठ का वर्ष है। इस अवसर पर देश भर में गीता परिवार की सभी शाखाएँ विविध प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से स्वामी विवेकानंद का जन्मोत्सव मना रही हैं।

संगमनेर

गीता परिवार, संगमनेर द्वारा १२ जनवरी को एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इस शोभायात्रा में संगमनेर के सभी विद्यालयों ने भाग लिया। बच्चे ही नहीं; बल्कि आम नागरिक-स्त्री पुरुष, वृद्ध, युवा सभी बड़ी संख्या में शामिल थे। स्वामी विवेकानंद के वेश में सजे ५० बच्चे शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। स्वामीजी के प्रेरणादायी वचनों का सन्देश देने वाले २०० हाथ-तख्ते बच्चे-बड़े सभी को वितरित किये गए। घोषणा और गीत-गान करते हुए शोभायात्रा आगे बढ़ रही थी और स्थान-स्थान पर पुष्प-वृष्टि से स्वागत किया जा रहा था। आम नागरिकों का स्वयं-स्फूर्त सहभाग इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि १५० वर्ष पश्चात् आज भी स्वामी विवेकानंद आबाल-वृद्ध, महिला-पुरुष सभी के श्रद्धा-केन्द्र और प्रेरणा-स्रोत बने हुए हैं। स्वामीजी की विशाल मूर्ति सभी के आकर्षण का केन्द्र बनी । माल्यार्पण कर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ रही थी। इस विशाल शोभायात्रा का समापन एक विशाल सभा के साथ हुआ जिसमें गीता परिवार के कार्याध्यक्ष डॉ. संजयजी मालपाणी एवं प्रसिद्ध वक्ता श्री एस.जेड. देशमुख ने सभा को संबोधित किया। ८वीं कक्षा के एक विद्यार्थी नरेन्द्र देशपांडे ने स्वामीजी का परिधान धारण कर शिकागों की धर्मसभा में दिया गया उनका भाषण प्रस्तुत किया। ध्रुव अकादमी के विद्यार्थियों ने ''वन्दे विश्वगुरुम्'' और ''बलसागर भारत'' गीत प्रस्तुत किये। इस प्रकार वर्ष भर चलने वाले इस विवेकानंद उत्सव का श्रीगणेश हुआ।

औरंगाबाद

औरंगाबाद शाखा द्वारा इसी अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विवेकानंद चित्र रंग भरो स्पर्धा, विवेकानंद प्रश्न-मञ्जूषा, भाषण प्रतियोगिता और सामूहिक गीत-गान प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में बच्चों ने भाग लिया। १२ जनवरी को प्रातः १० बजे उत्सव का आरंभ हुआ। सबसे पहले चित्रकला प्रतियोगिता और उसके बाद

समूहगान प्रतियोगिता संपन्न हुई। इस समूह–गान प्रतियोगिता में अनेक विद्यालयों ने भाग लिया। इसके पश्चात् स्वामी विवेकानंद के जीवन पर आधारित लघु नाटिका का मंचन किया गया। पुरस्कार के रूप में स्मृति–चिन्ह के साथ स्वामीजी की पुस्तकें भी दी गयी। जिला संपर्क प्रमुख श्री सतीश जी साबू के मार्गदर्शन एवं शाखाध्यक्ष सौ शोभा तोषनीवाल के नेतृत्व में शोभा मालाणी, उषा धूत, सीमा लोया, स्मिता मुंदड़ा, मंजू, जाजू, विजय काबरा, रमा साबू, चन्द मूंदड़ा, सुजाता भालेकर, संगीता दरक एवं मंगल राठी ने आयोजन की सफलता के लिए परिश्रम किया।

ताड़कलस

महाराष्ट्र के ताड़कलश (जिला–परभणी) में स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर निःशुल्क मोतियाबिंद एवं दन्तरोग परीक्षण तथा निःशुल्क मोतियाबिंद शल्य–क्रिया एवं दन्त–रोग उपचार शिविर का आयोजन किया गया। उदगीर के डॉ. विद्या पाटील ने रोगियों का निःशुल्क उपचार किया। बड़ी संख्या में ग्रामवासियों ने इस आरोग्य–शिविर का लाभ उठाया। सिर्फ ताड़कलस ही नहीं वरन आस–पास के गावों से भी लोगों ने यहाँ स्वस्थ्य–लाभ प्राप्त किया। स्वामी विवेकानंदजी ने "नर–सेवा ही नारायण सेवा" इस आदेश का अक्षरशः पालन करते हुए ताड़कलस की गीता परिवार शाखा ने एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। इस सेवा–कार्य के लिए श्री नरहरी भाग्यवंत, श्री हरिभाऊ अम्बोरे, श्री गजानन अम्बोरे एवं श्री गंगाधरराव चिमटे ने विशेष परिश्रम एवं योगदान दिया।

हैदराबाद

हैदराबाद शाखा द्वारा अलग–अलग विद्यालयों में स्वतंत्र रूप से स्वामी विवेकानंद प्रश्न–मञ्जूषा एवं चित्रकला स्पर्धा का आयोजन किया गया। सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ इन कार्यक्रमों में भाग लिया। १२ जनवरी को विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति–पत्र वितरित किये गए। स्वामी विवेकानंद के १५० वे जन्मदिन के उपलक्ष्य में हैदराबाद शाखा ने १५० दिनों में १५० विद्यालयों में स्वामीजी के जीवन पर आधारित लघु–नाटिका, प्रश्न–मञ्जूषा एवं चलचित्र प्रदर्शन का शभ संकल्प किया है।

सामान्य ज्ञान प्रश्नावली (४) एवं ५ के उत्तर

सामान्य ज्ञान प्रश्नावली (४) के सही उत्तर :–

१. (ब) ३ वर्ष, २. (स) ७०० श्लोक, ३. (ब) श्वेत, ४. (अ) चार भाग, ५. (स) वैशम्पायन, ६. (स) गाँधारी, ७. (स) नन्दिनी, ८. (स) पांच बाण, ९. (ब) वरुण, १०. (स) दुःशासन तांबे, ११. (ब) खर्च की देखभाल, १२. (स) यज्ञ के अन्त में, १३. (ब) अक्षय पात्र तांबे का था, १४.(स) गणेश जी, १५. (स) अर्जुन।

सामान्य ज्ञान प्रश्नावली (५) के सही उत्तर :–

१. एक लाख श्लोक, २. (स) महर्षि धौम्य, ३.(स) श्रुतकीर्ति , ४. (स) १८ अध्याय, ५.(ब) शान्तनु ६.(ब) महर्षि भारद्वाज, ७.(स) विदुर, ८. (ब) अर्जुन, ९. (स) विकर्ण, १०. (स) अस्त्र , ११. (ब) बहनोई १२. (अ), १३. (ब) महर्षि श्रृंग, १४. (अ) दिति, १५. (ब) महर्षि कौशिक

सामान्य ज्ञान प्रश्नावली (४) एवं (५) हेतु प्राप्त उत्तरों में एक भी सर्व शुद्ध हल प्राप्त नहीं हुआ।

– सम्पादक

गीता परिवार लखनऊः विविध कार्यक्रम

दिसम्बर से फरवरी माह के दौरान गीता परिवार लखनऊ द्वारा संपन्न किये गए कार्यक्रमों की सूची

१. ३१ दिसम्बर २०१२ को प्रचलित नववर्ष उत्सव का आयोजन लगातार तेरहवे वर्ष गीता परिवार लखनऊ द्वारा किया गया; जिसमें १०० बालक-बालिकाओं ने राष्ट्र भक्ति, ईश्वर भक्ति, मातृ-पितृ भक्ति इत्यादि गुणों पर नाटक नृत्य-नृत्य नाटिकाएं, हास्य व



मनोरंजन के भरपूर कार्यक्रमों का मंचन किया। लगभग ५०० लोगों ने प्रति वर्ष की भांति इस कार्यक्रम का आनंद लिया। इस कार्यक्रम की नगर में इतनी लोकप्रियता हो गयी है कि बिना किसी प्रचार के लोग अपने आप ही कार्यक्रम देखने उपस्थित हो जाते हैं। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण के पश्चात् ''ज्योति से ज्योति जलाते चलो'' भजन पर मोमबत्ती के प्रकाश में अत्यंत आनंद व उल्लास के साथ-साथ हुआ। सभी प्रतिभागी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। ठीक ११.५० पर हनुमान चालीसा का पाठ आरम्भ हुआ। जिससे सभी लोगों ने २०१३ में भक्ति के साथ प्रवेश किया।

२. १२ जनवरी स्वामी विवेकानंद जयन्ती सार्ध शती दिवस के रूप में बाल संस्कार केन्द्रों पर विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे प्रश्नोत्तरी, स्वामी जी से सम्बंधित सुवाच्य एवं वन्दे विश्व गुरुम् गीता की प्रतियोगिताएं, हुई जिसमें सभी बालको को पुरस्कृत किया गया। १२ जनवरी स्वामी विवेकानंद जयन्ती जिला आंबेड़कर नगर के महावीर इंटर कॉलेज में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन का आयोजन किया गया। स्वामी विवेकानंद जी के व्यक्तित्व पर संबोधित किया गया। छात्र छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिया गया। लगभग २०० बालकों ने सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

३. १८ फरवरी को सामूहिक सूर्य नमस्कार लखनऊ में जयपुरिया इंटर कॉलेज में २१०० बालकों के साथ सामूहिक सूर्यनमस्कार का भव्य आयोजन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुधीर शंकर हलवासिया जी, श्री जिंदल जगदीश जी, श्री राजेन्द्र गोयल जी उपस्थित रहे। २१०० पूर्ण प्रशिक्षित बालकों ने जब सधे हुए मंत्रोच्चार के साथ लयबद्ध सूर्यनमस्कार की आवृत्ति की तो उपस्थित सभी लोग उस विहंगम दृश्य को देखते ही रह गए। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अंजू वाल ने योग शिक्षक श्री विश्वनाथ जी के सान्निध्य में इस पूरे कार्यक्रम का प्रशिक्षण एवं सफल आयोजन किया। जिसके लिए कार्यक्रम प्रमुख श्री आशु गोयल ने उनका धन्यवाद किया।

जयसिंगपुर

गीता परिवार जयसिंगपुर द्वारा शक्ति को जागृत करने के लिए तथा निर्भयता पूर्वक समस्त बाधाओं से लड़ने के लिए महाविद्यालयीन बालिकाओं के लिए श्रीमती संगीताजी जाधव के सान्निध्य में १५ दिसम्बर २०१२ को सृजन (The Grooming Programme) कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें श्रीमती संगीता जाधव ने अनेक प्रत्याशियों के द्वारा अपना स्वयं संरक्षण कैसें करें इस विषय पर मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर श्री गुरव सर ने 'करियर एंड वेल्थ मॅनेजमेंट' पर व्याख्यान दिया तथा डॉ. श्रीकांतजी मालकर ने स्वास्थ्य विषय पर प्रकाश डाला एवं डॉ. स्वाती वालिम्बे ने भारतीय वेशभूषा के आदर की चर्चा की। एड्.एम.व्ही. अर्जुनवाडकर ने महिलाओं की सुरक्षा के विषय में कानून

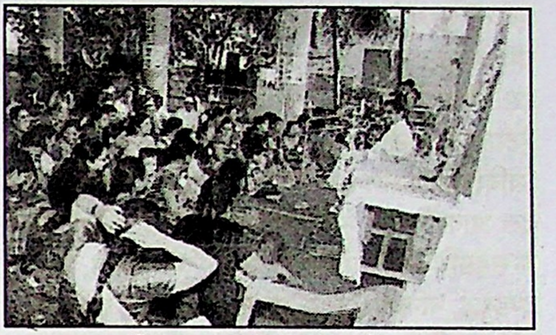
के नियमों के बारे में विस्तार से बताया। इस कार्यशाला में २५० बालिकाओं ने भाग लिया तथा एक दिवसीय कार्यशाला की प्रतिक्रिया में सभी ने ५ दिवस की कार्यशाला की मांग की।

दि. २७ दिसम्बर २०१२ को सिद्धिविनायक मन्दिर के प्राण प्रतिष्ठा उत्सव में पू. गुरुदेव का आगमन जयसिंगपुर शहर में हुआ। इन सौभाग्य के क्षणों का पूरा सदुपयोग करते हुए गीता परिवार के कार्यक्रमों ने नगर परिषद शिक्षण मंडल के तत्त्वावधान मे अध्यापकों के लिए मराठी भाषा में ''तुम्हीच उद्याचे शिल्पकार'' इस विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। पू. गुरुदेव की अमोघ व अमृतमय वाणी ने सभी को कृतार्थ किया। इस व्याख्यान में हजारों शिक्षक उपस्थित थे। इसके पश्चात् गीता परिवार जयसिंगपुर के कार्यालय में पू. गुरुदेव का आगमन समस्त कार्यकर्ताओं के लिए सौभाग्य का क्षण रहा।

दि. ११ व १२ को स्वामी विवेकानंद जयंती के निमित्त जयसिंगपुर, शिरदवाड, कुरुंदवाड इत्यादि गांवों की स्कूलों में पं. अशोकभैया के सान्निध्य में ''मैं भी बनूँ महान'' इस विषय पर ओजस्वी व्याख्यानों का आयोजन किया गया। कुल ४ स्कूलों में अशोकभैया ने व्याख्यान दिए तथा सम्पूर्ण वर्ष में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागी एवं विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम में जयसिंगपुर नगराध्यक्षा भी उपस्थित रही। जयसिंगपुर के ज्येष्ठ नागरिकों के लिए ''निष्काम जीवन'' विषय पर भी अशोकभैया ने व्याख्यान दिया।

कोल्हापुर

गीता परिवार कोल्हापुर द्वारा श्री स्वामी समर्थ मन्दिर, प्रज्ञापुरी के पावन प्रांगण में एक दिवसीय कार्यकर्ता विकास वर्ग का आयोजन दि. १५ जनवरी को किया गया। जिसमें सम्पूर्ण कोल्हापुर शहर से १०० कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम की शुरूआत स्वामी समर्थ मन्दिर के अध्यक्ष प.पू. काटकर साहेब व नारायणजी ने दीप प्रज्वालन व आशीर्वचन के द्वारा की। इस विकास वर्ग में गीता परिवार द्वारा प्रकाशित ''संस्कार सुमन'' पुस्तक



का पाठ्यक्रम लिया गया। गीता परिवार के मुख्य कार्यालय संगमनेर से पधारे राष्ट्रीय कार्यविस्तारक पं. अशोकभैया ने पू. गुरुदेव द्वारा प्रदत्त संस्कार पंचसूत्री पर व्याख्यान दिया। जयसिंगपुर गीता परिवार से प्रमिलाजी माहेश्वरी ने प्रज्ञा संवर्धन योग के बारे में जानकारी दी। कार्यकर्ता विकास वर्ग का आयोजन कोल्हापुर गीता परिवार की प्रमुख श्रीमती वृषालीजी खोत ने किया तथा विकास वर्ग को सुन्दर रीती से संपन्न करने में श्रीमती प्रतिभाजी तबीब सौ. आशा व भाग्यश्री चव्हाण, सीमा पाटिल, प्राजक्ता जोशी, रेखा सेडबड़े एवं प्रिया कदम ने विशेष सहभागिता दिखाई।

रिसोड (अकोला)

स्वामी विवेकानंद जयंती के निमित्त रिसोड गीता परिवार की ओर से विभिन्न स्कूलों में स्वामी विवेकानंद प्रश्न मञ्जूषा व रंग भरो स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग ५०० बच्चों ने भाग लिया। विजेता छात्राओं को यथोचित पुरस्कार भी प्रदान किया। इस कार्यक्रम की सम्पन्नता में रिसोड गीता परिवार प्रमुख विजयाजी करवा व कार्यकर्ताओं ने विशेष परिश्रम किया।

कोटा में पंचदिवसीय बाल संस्कार शिविर एवं अन्य कार्यक्रम

गीता परिवार के तत्त्वावधान में एस.आर. पब्लिक स्कूल एवं माहेश्वरी महिला मण्डल, कोटा के द्वारा आयोजित यह शिविर, कोटा का चौथा आवासीय शिविर था। शिविर में दो वर्ग थे। कनिष्ठ वर्ग-४ वर्ष से ९ वर्ष एवं वरिष्ठ वर्ग-९ वर्ष से १५ वर्ष। इस शिविर में दोनों वर्गों में कुल १३० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इस शिविर में कोटा के अलावा बून्दी, जोधपुर, उदयपुर, हैदराबाद, दिल्ली, इन्दौर से शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में प्रशिक्षण देने संगमनेर (महाराष्ट्र) से ६ सदस्यीय दल आया जिसको नेतृत्व प्रदान किया गीता परिवार न्यास के सहसचिव श्री गिरीश डागा ने। शिविर में झाँझ, नियुद्ध, दण्डयुद्ध, नानचाप, लोक भजन, कृष्णलीला इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया। बालकों की ऊर्जा का एहसास इस बात से होता हैं कि दिसम्बर माह की ठण्ड की परवाह किये बिना ही बच्चे सबेरे ६ बजे से रात्रि १०.३० तक अति उत्साह से सभी कार्यक्रमों में भाग लेते थे।

शिविर के अन्तर्गत योग, ध्यान, उपासना, गीता दर्शन, नृत्य नाटक, टॉक शो, मेरा हीरो १+१= ११, खेलकूद, कला प्रशिक्षण एवं रात्रि में नित्य इन्द्रधनुष का कार्यक्रम किया गया जिसमें बच्चों को खेल खेल में हमारी संस्कृति का परिचय कराकर उनमें परिवार, समाज एवं देश के प्रति आदर एवं प्यार की भावना के बीज बोने का काम किया गया।

भव्य शोभा यात्रा :- ३० दिसम्बर को भव्य शोभा यात्रा का आयोजन श्री राधाकृष्ण मंदिर तलवण्डी से किया गया जो गीता परिवार कोटा शाखा का उद्गम स्थल है। शिविरार्थी स्वामी विवेकानन्द, वीर शिवाजी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, लाला लाजपतराय, भारतमाता, सुभाष चन्द्र बोस, महाराणा प्रताप इत्यादि एवं श्री राम, लक्ष्मण, सीतामाता, माँ सरस्वती, माँ लक्ष्मी, हनुमानजी, गणेशजी , शिवजी, पार्वतीजी, कृष्ण, अर्जुन, राधाजी आदि की वेशभूषा में थे। बोध वाक्य लिए पुराने शिवरार्थीयों की टोली, भजन मण्डली, शिविर में कला प्रशिक्षण पाये बालकों की टोली झाँझ, मंजीरी, नानचाप, दण्डयुद्ध, नियुद्ध का प्रदर्शन करते हुए, साथ में अभिभावकगण और इन सभी का निरीक्षण कर रहे थे पालकी में सुशोभित हमारे श्रीकृष्ण भगवान्।

३१ दिसम्बर को वर्ष २०१२ की विदाई एवं २०१३ का स्वागत बच्चों ने हनुमान चालीसा एवं ''एक शाम बाँके बिहारी के नाम'' भजनों से किया। शाखा के पूर्व अध्यक्ष एवं मार्गदर्शक श्री गोविन्द माहेश्वरी ने जो एलेन केरियर इन्स्टीट्यूट के निदेशक भी है भजनों के माध्यम से बच्चों में उत्साह एवं भक्ति निर्माण कर नये वर्ष के स्वागत को एक नया आयाम दिया। बच्चों ने भी भजनों को प्रस्तुति दी एवं पूर्ण रूप से सहभागी बने।

''दो शब्द माता-पिता के लिए'' कार्यक्रम गिरीश भैया ने बहुत ही सुन्दर तरीके से लिया एवं अभिभावकों को स्लाइड शो के माध्यम से कई जानकारी दी। स्वामी विवेकानन्द जी पर एक Documentary रचना दीदी, जो कि विवेकानंद केन्द्र की पश्चिम आंचल की प्रमुख है, ने दिखाई। समापन समारोह की मुख्य अतिथि थी कोटा की महापौर श्रीमती डॉ. रत्ना जैन। बच्चों की विदाई मानो बेटियों को विदा करना था। बड़े ही बोझिल मन से बच्चों ने शिविर स्थल, से विदा ली एवं आगामी शिविर में पुनः मिलने का संकल्प लिया।

शिविर की विशेष उपलब्धि रही पुराने शिविरार्थी विपुल गुप्ता, अंकित राठी, सुश्री समीक्षा माहेश्वरी का कार्यकर्ता के रूप में जुड़ाव एवं शिविर में अपने दायित्व का दक्षता से निर्वहन। जयपुर से आए शिविरार्थी के अभिभावकों ने शिविर को श्रेष्ठतम बताते हुए अगले वर्ष का शिविर जयपुर में लगाने का प्रस्ताव दिया है।

स्वामी विवेकानंद जयंती - शिविर के पश्चात् समय की कमी होते हुए भी कार्यकर्ता पूरे जोश से स्वामी विवेकानंद जी के १५० वे जन्म वर्ष के आयोजन में लग गये। युवा उत्कर्ष नाम से आयोजित इस कार्यक्रम को गायत्री परिवार की युवा शाखा, दिया (डिवाइन इण्डिया यूथ एसोसिएशन) के साथ मिलकर मनाया। ३० स्कूलों में विवेकानंद जी पर ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई

एवं ९० बच्चों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत यहाँ के आई.एल. ऑडिटोरियम में बाल भवन के बच्चों ने महापुरूषों के वेश में ''वंदे विश्व गुरुम्'' गीत सुनाकर उपस्थित गणमान्य बन्धुओं को आश्चर्यचकित कर दिया। ३ विद्यालयों के बच्चों ने सामूहिक रूप से गीता के बारहवें अध्याय का कण्ठस्थीकरण प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे यहाँ के विधायक श्री ओम बिरला, मुख्य वक्ता आई.आई.टी. जोधपुर के श्री विवेक विजयवर्गीय एवं गीता परिवार के श्री गोविन्द माहेश्वरी। गायत्री परिवार के अध्यक्ष श्री जी.डी.पटेल ने बच्चों ने को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

हनुमान जयंती पर नगर के विद्यालयों में ''हनुमान ज्ञान प्रतियोगिता'' एवं हनुमान चालिसा पठन का कार्यक्रम प्रस्तावित है। **शान्ता माहेश्वरी**, अध्यक्ष

अकोला

अकोला में गीता परिवार की शाखा विगत वर्ष मार्च माह में रामदास पेठ में प.पू. गुरुदेव के आशीर्वाद से आरम्भ हुयी। बालकों में संस्कार रोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत बालकों को गीता संथा, चित्रकला, प्रेरणादायी कथाओं के साथ ही आयुवर्गानुसार विभिन्न प्रकार की शारीरिक स्पर्धाएँ भी आयोजित की जाती है।



उल्लेखनीय है कि मार्च २०१२ से नियमित रूप से प्रत्येक रविवार को सायं ४ से ६.३० बजे तक ये आयोजन सम्पन्न होते हैं। इसमें सौ. संगीता ओमप्रकाश शर्मा का विशेष योगदान रहता है।

चान्दूर बजार

गीता परिवार चान्दूर बजार द्वारा दिनांक १८ एवं १९ जनवरी २०१३ को महाविद्यालयीन छात्राओं की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें छात्राओं को आत्मरक्षा (सहज संरक्षण), सुसंस्कृत परिधान, प्रसाधन तथा बॉडी लैंग्वेज के साथ ही विवाह पूर्व समुपदेशन आदि सौ. संगीता जाधव, सोल्हापुर के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुए।

इसमें आसेगांव के ३ महाविद्यालयों से १५० छात्राओं ने एवं चान्दूर बजार के ६ महाविद्यालयों की २४८ छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस आयोजन में आरती तिवारी, डॉ. दीपाली किटुकले, सौ. सुमेधा बारसिंघे ने प्रशंसनीय सहयोग दिया।

विवेकानन्द जयन्ती :-

उपरोक्त कार्यक्रम के अतिरिक्त ''परिवार'' द्वारा १२ जनवरी को स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के अवसर पर बालकों की प्रभातफेरी निकाली गई तथा उन्हें स्वामी जी की जीवनी एवं कार्यों से परिचित करवाया गया। इसी के तहत २५ जनवरी को जिला स्तरीय वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन भी किया गया जिसका विषय था ''विवेकानन्द का जीवन एवं कार्य''। इसमें अमरावती जिले के ७ तालुकों के १०० छात्रों ने भाग लिया।

उपरोक्त दोनों कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु सौ. शोभ हरकुट एवं सौ. नयना, सौ. रेखा परिहार आदि का विशेष योगदान रहा।

– **सौ. शोभा हरकुट**, चान्दूर बजार



अभिनंदन !

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के ज्येष्ठ मार्गदर्शक न्यासी प्रा. दत्तात्रय जी काले को वैदिक पदविका पाठ्यक्रम के प्रचारक एवं संरक्षक के रूप में कार्य करने हेतु नागपुर स्थित कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा विशेष कार्यकारी अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया है। प्रा. काले जी का हार्दिक अभिनंदन !

गीता परिवार संस्कार शिविर, ढालेगांव



गीता परिवार एवं श्रीसमर्थ संत महात्माजी वेदविद्यालय, ढालेगांव द्वारा वेदविद्यालय में पंचदिवसीय संस्कार शिविर का आयोजन दि. २८.११.२०१२ से ०२.१२.२०१२ के दौरान सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में ढालेगांव, सावरगांव तथा जिंतूर वेदविद्यालय के लगभग १०० छात्रों ने भाग लिया। छात्रों के शारीरिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक विकास हेतु कई प्रकार के प्रशिक्षण सम्पन्न हुये।

शिविर हेतु विशेष रूप से पं.अशोकजी पारीक एवं श्रीमती प्रमिलाजी माहेश्वरी ढालेगांव पधारे। उन्होंने छात्रों को योग, प्राणायाम, सूर्यनमस्कार, गीतापाठ, विविधगुणदर्शन आदि का प्रशिक्षण किया। ढालेगांव के बालकों हेतु भी शिविर में अलग समय दिया गया। शिविर के मध्य मराठवाड़ा संपर्क प्रमुख डॉ. राजकुमारी लड्डा ने उपस्थित होकर उत्साह बढ़ाया।

समापन समारोह में ढालेगांव के सरपंच श्री शिंदे एवं संस्थाध्यक्ष डॉ.द्वारकादासजी लड्डा ने उपस्थित होकर उत्साहवर्धन किया। विशेष प्रवीणता प्राप्त छात्रों को पुरस्कार एवं सभी सहभागी छात्रों को प्रशस्ती-पत्र प्रदान किया गया। शिविर में सीखी बातों को छात्रों ने समापन कार्यक्रम में प्रस्तुत किया। वैसे शिविर आयोजित करने का आग्रह छात्रों ने अपने मनोगत में किया।

समापन कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य वे.मू. अजय पाठक ने अपने मनोगत में संस्कार शिविर की उपयुकता बताई। इस अवसर पर पं. अशोकजी पारीक एवं प्रमिलाताई माहेश्वरी ने भी अपने विचार रखे। अध्यक्षीय समारोह में डॉ. द्वारकादासजी लड्डा ने वैसे शिविर से उपर्युक्त बातें आत्मसात करने का आह्वान छात्रोंको किया। कार्यक्रम में विद्यालय के न्यासी श्री जयप्रकाशजी बिहाणी, श्री सीतारामजी मंत्री, श्री भराडिया सर, सौ. राजकंवरजी लड्डा, श्री कुलकर्णी सर, अध्यापक, व्यवस्थापक आदि सम्मिलित हुये।

– **श्री. कमलाकर पाठक**, व्यवस्थापक

स्वामी विवेकानंद जयंती उत्सव

ढालेगांव में स्वामी विवेकानंदजी के जन्म का १५० जयंती वर्ष के अन्तर्गत कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसमें प.पू. स्वामी गोविंददेवगिरिजी महाराज के निर्देशानुसार वेदविद्यालय में स्वामी विवेकानंद का जन्मदिन (१२ जनवरी) उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर स्वामीजी की प्रतिभा के माल्यार्पण के पश्चात् सभी छात्र एवं उपस्थितों ने ''वंदे विश्वगुरुम्'' गीत का गान किया। छात्रों ने इसका कंठस्थ गायन किया। कुछ छात्रों ने स्वामीजी के जीवनचरित्र पर अपने विचार रखें।

छात्रों के मनोगत के बाद विद्यालय के प्रधानाचार्य वे.मू. अजय पाठक में छात्रों को मार्गदर्शन किया। विद्यालय के व्यवस्थापक श्री कमलाकर पाठक ने भी स्वामीजी के चरित्र पर अपने विचार रखे।



कार्यक्रम के अंत में छात्रों को मिठाई बांटने के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।



गीता परिवार युवा विभाग की

सौ. संगीता जाधव : एक परिचय

'स्वयं व्यवस्थापन से राष्ट्रनिर्माण' इस बोधवाक्य से प्रेरित 'सृजन - ग्रूमिंग प्रोग्राम' के माध्यम से महाविद्यालय छात्राओं को सजग कराने हेतु पूज्यवर स्वामी गोविंददेवगिरि जी महाराज की शिष्या, गीता परिवार की विस्तारक तथा २५ वर्षों से मार्शल आर्ट में कार्यरत ब्लेक बेल्ट थर्ड दान धारक सौ. संगीता सुरेश जी जाधव 'आत्मसंरक्षण एवं स्वयं संयोजन' विषय पर कार्य कर रही हैं।

महाराष्ट्र, गोवा व राजस्थान के १५ जिलों तथा ग्रामीण इलाकों के सौ महाविद्यालयों में 'गीता परिवार युवा विभाग तथा संस्कृति प्रतिष्ठान' द्वारा स्वामीजी के आदेश से एकदिवसीय 'सृजन' कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसमें आत्मसंरक्षण-सहज संरक्षण, वस्त्रालंकार एवं देहबोली, भारतीय पोषक, आहार तथा निरामय आरोग्य व्यवस्थापन, समय एवं लक्ष्य संयोजन, स्वयं को जानो, भारतीय संविधान से महिलाओं के अधिकार तथा कायदे, संपत्ति संवर्द्धन एवं नियोजन, विवाहपूर्व समुपदेशन, संस्कार-एक वर्तनशास्त्र इन विषयों पर युवतियों को मार्गदर्शित किया जाता है। मन, बुद्धि, शरीर का एकत्रित विवेकपूर्ण संयोजन कैसे करें, सामाजिक मानसिक -प्राणिक-शारीरिक संरक्षण कैसे करें - क्या खबरदारी लेनी चाहिए स्वयं को नियोजनपूर्ण कैसे बनाएँ तथा संपूर्ण सुदृढ़ संपन्न व्यक्तित्व निर्माण करके राष्ट्र को सबल समर्थ बनाने में स्वयं का सहयोग कैसे दें आदि विषयों पर 'सृजन' द्वारा जागरण किया जाता है तथा इन्हीं युवतियों को प्रेरित करके बाल संस्कार प्रक्रिया में भावी कार्यकर्ता निर्माण करने हेतु गीता परिवार राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संयजी मालपाणी के नेतृत्व में 'कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर' के आयोजन भी किए जा रहे हैं।

> पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा से अब तक महाराष्ट्र, गोवा एवं राजस्थान के १५ जिलों के ग्रामीण क्षेत्र की आत्मसंरक्षण हेतु प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

आदर्श भावी माता तथा कार्यकर्ता के निर्माण के इस जागरण में सौ. संगीता सुरेश जी तथा अन्य मार्गदर्शक श्री राजगोपाल मिणीयार, सौ. प्रीति राठी, डॉ. किरण सारदा, एड. सरोजिनी तमशेट्टी, डॉ. प्रतिभा सिरिया, प्रा. राजशेखर येळीकर आदि प्रशिक्षकों का संघ कार्यरत है।

ग्रीष्मावकाश में आठ दिवस का आवासीय शिविर आयोजित करके सभी विषयों का मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण दिये जाने की योजना भी विचाराधीन है।

लघु कथा

गुरुकृपा का सच्चा अधिकारी !

धर्मराज सभी पर एक नजर डालकर धर्मासन पर बैठ गए। उस दिन उनके द्वार पर भारी भीड़ थी। अनेक जीवात्माएँ अपना फैसला सुनने के लिए उतावली थीं। सभी के अपने-अपने दावे थे। प्रायः सभी को अपने सत्कर्मों का, अपने पुण्यों का भारी गर्व था। हर एक का कहना यही था कि वह स्वर्ग में सबसे पहले प्रवेश का अधिकारी है। चित्रगुप्त इनका हिसाब-किताब अपनी बही में देख रहे थे और धर्मराज को वास्तविक जानकारी दे रहे थे।

इस प्रक्रिया में लगने वाली देर किसी को बरदाश्त नहीं हो रही थी। कुछ पंडितों ने चित्रगुप्त पर झल्लाते हुए कहा, ''यह क्या देर लगा रही है आपने? आपको विद्वानों का सही ढंग से सम्मान करना भी नहीं आता। हम लोगों के लिए शीघ्र ही स्वर्ग की व्यवस्था की जाए।'' पंडितों के इस उग्र तेवर के जवाब में चित्रगुप्त ने संयत स्वर में कहा, ''महाराज आप लोग थोड़ा ठहरिए। पहले हम आप लोगों के संबंध में यह पता लगा लें कि जो ज्ञान आपने पाया है, वह शास्त्रों से पाया है या कि स्वयं से? क्योंकि निरे किताबी ज्ञान का यहाँ कोई मूल्य नहीं है।''

इतने में एक संन्यासी भीड़ को चीरते हुए, अपने आगे खड़ी जीवात्माओं को धकियाते हुए आगे आ धमके और कहने लगे, ''मैंने बहुत उपवास किए हैं, अनेकों कष्ट सहे, वेदांत के वाक्य रटे हैं। भला मेरे समक्ष मुझसे बड़ा भला और कौन है?'' इस पर चित्रगुप्त ने कहा, ''स्वामी जी, थोड़ा ठहरिए। जरा हम पता लगा लें कि इतनी तपस्या आपने क्यों की? कहीं इसके पीछे आपके अहंकार का कोई सूक्ष्म प्रयोजन तो नहीं था, क्योंकि जहाँ प्रतिष्ठा और सम्मान की लालसा है, वहाँ न कोई त्याग है और न तप है।''

तभी वहाँ जनता के कुछ समाज सेवक आ गए। वे भी स्वर्ग में प्रवेश पाने की जल्दी में थे। चित्रगुप्त ने उनसे कहा, ''आप लोगों को भी भूल हो गई है। जो सेवा पुरस्कार माँगती है, वह सेवा नहीं है। फिर भी हम आपके बारे में पता लगा लेते हैं।''

तभी चित्रगुप्त की दृष्टि सबसे पीछे अँधेरे में खड़े एक व्यक्ति की ओर गई। चित्रगुप्त के पूछने पर उसने कहा, ''महाराज, कहाँ मैं और कहाँ स्वर्ग। मैं तो किसी भी तरह से स्वर्ग में प्रवेश का अधिकारी नहीं हूँ। मैंने स्वर्ग के लायक किया ही क्या है? मैं ठहरा एकदम अज्ञानी। मुझे न शास्त्र मालूम हैं, न संस्कृत आती है। संन्यास मैं जानता नहीं। मेरे पास कुछ था ही नहीं, जो मैं उसे छोड़ता और रही सेवा की बात, सो मैं कर नहीं पाया।''

चित्रगुप्त उसकी बातों को बड़े धीरज से सुन रहे थे। वह कहे जा रहा था, ''महाराज! मैंने तो बस अपने गुरु की बात मानी है। वह जो कहते गए, उसे मैं करता गया। उनसे कुछ ज्यादा जानने-सीखने लायक मेरी बुद्धि ही नहीं थी। जीवन में कुछ बुरे कर्म भी हुए होंगे। हाँ, इतना मैं कह सकता हूँ, मेरे मन में अपने गुरुदेव के लिए प्रेम था। पीड़ित मनुष्यों की सेवा के लिए छटपटाहट भी रहती थी। आपके यहाँ इसका कुछ फल मिलता हो, तो मैं नर्क में जाना चाहता हूँ।''

''दरअसल मैं चाहता हूँ कि नरक की यातनाओं से मेरे पापों की सफाई हो जाए और मैं ऐसी पवित्रता और पात्रता अर्जित कर सकूँ, जिससे कि मेरे गुरु अगले किसी जीवन में मुझे अपना सकें। उनकी कृपा दृष्टि में मैं सत्पात्र बन सकूं।''

''पर नर्क क्यों?'' चित्रगुप्त थोड़ा चौंके, धर्मराज भी अचरज में पड़े। अन्य जीवात्माएँ भी थोड़ा हड़बड़ाई सभी के मन में उभरी जिज्ञासा का समाधान करते हुए उसने कहा, ''दरअसल मैं चाहता हूँ कि नरक की यातनाओं से मेरे पापों की सफाई हो जाए और मैं ऐसी पवित्रता और पात्रता अर्जित कर सकूँ, जिससे कि मेरे गुरु अगले किसी जीवन में मुझे अपना सकें। उनकी कृपा दृष्टि में मैं सत्पात्र बन सकूं।''

अबकी बार धर्मराज स्वयं बोले, ''तुम सच्चे शिष्य हो। जो अच्छा शिष्य बन सका है, वह समस्त मानवों में धन्य है। स्वर्ग के द्वार सदा तुम्हारे लिए खुले हैं, मोक्ष भी तुम्हें सुलभ है। अपने सद्गुरु की भक्ति से बढ़कर अन्य कोई भी कर्म श्रेष्ठ नहीं है।''

वृत्तदर्पण

दि. ०२/०२/२०१३ से ०८/०२/२०१३ तक तीर्थराज प्रयाग में पूर्ण कुंभ के अवसर पर दिल्ली जनकल्याण कार्यालय द्वारा भारतमाता मंदिर शिबिर में स्वामी अखिलेश्वरानंदजी महाराज के सान्निध्य में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया था। इसके अंतर्गत ०६/०२/२०१३ को षट्तिला एकादशी के दिन स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज का तिथि से जन्मदिवस मनाया गया। गीत के साथ स्वामीजी का स्वागत किया गया। बादमें वेदमंत्रों के साथ हस्ताभिषेक, पूजन, तिलक, एवं तिलगुड के लड्डू से तुलादान कर के प्रसाद सब में वितरित किया गया। स्वामीजी को माल्यार्पण तथा औक्षण किया गया। पूज्य संतों के द्वारा स्वामीजी का सम्मान हुआ जिसमें स्वामी हरिचेतनानंदजी एवं स्वामी कल्याणदासजी, अमरकंटक प्रमुख उपस्थित थे। ६४ वर्ष पूर्ण हो गए इसलिए ६४ गुलाब के पुष्पों की माला स्वामीजी को अर्पण की गई। स्वामीजी के आशीर्वचन एवं संत ज्ञानेश्वर महाराज की आरती से समापन किया गया।

जयसिंगपुर में भगवान् सिद्धिविनायक मंदिर का लोकार्पण दि. २७/१२/२०१२ को पू. स्वामीजी के तीन दिवसीय ज्ञानेश्वरी पर प्रवचन करवाकर किया गया। श्री हिरालालजी मालू इस कार्यक्रम के अध्यक्ष थे। भव्य मंदिर में कहींपर भी लोहे का प्रयोग एवं सिमेंट का उपयोग नहीं किया गया। मिट्टी एवं ईट का ही प्रयोग कर प्राचीन पद्धति से ऐसी रचना की गई है की चैत्र शु. १ के दिन सूर्य की पहली किरण गणेशजी के मूर्ति को आलोकित करती है। अष्टदल कमल की रचना कर के अष्टविनायक की स्थापना एवं मध्य में सिद्धिविनायक की स्थापना की गई है।

माता पार्वती के कन्या स्वरूप में की गई तप:स्थली एवं स्वामी विवेकानंदजी में राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा जगाने वाला सभी का श्रद्धास्थान कन्याकुमारी में दि. २९/१२/२०१२ से ०४/०१/२०१३ तक स्वामी गोविंददेव गिरि जी द्वारा विवेकानंद केंद्र में बुलढाणा अर्बन बँक परिवार द्वारा श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया जिसमें महाराष्ट्र से ७०० लोग कथा में गए थे।

व्यावहारिक नववर्ष का आरंभ इसी कथान्तर्गत था। ३१/१२/२०१२ को रात्री ९ बजे से ही कु. भक्ति सारडा, द्वारा भक्तिगीत का कार्यक्रम था। रात्री में हनुमान-चालीसा, सुंदरकांड, भगवद्नाम स्मरण करते हुए नववर्ष में प्रवेश किया गया।

दि. ०५/०१/२०१३ से ०७/०१/२०१३ तक मुंबई में बेडेकर मसालावाले के द्वारा मार्गशीर्ष महोत्सवान्तर्गत स्वामी विवेकानंद कथा का बेडेकर प्रांगण में आयोजन किया गया। स्वामी जी ने कहा राष्ट्र के पुनर्जागरण के लिए विवेकानंद की आराधना अति आवश्यक है। इस वर्ष स्वामी विवेकानंद की सार्ध जन्म शती वर्ष है। इसलिए स्वामीजी ने सर्वत्र विवेकानंद कथा करना आरंभ किया है। लगभग ५ कथाएं अभीतक हो गई हैं।

अन्य विषयोंपर कथा करना यह स्वामीजी के उपर सरस्वती माँ की कृपा ही है। भागवत कथा, रामकथा, देवीभागवत कथा, महाभारत कथा, शिवपुराण कथा, वेद कथा, ज्ञानेश्वरी भावकथा, गीता कथा, योगवासिष्ठ कथा, इन सब के साथ अब पहली बार सात दिवसीय हनुमान कथा का आयोजन १६/१२/२०१२ से २३/१२/२०१२ तक कोलकाता में वनबन्धु परिषद एवं श्रीहरि सत्संग समिती द्वारा संपन्न हुआ। ३५MM इस वाहिनी (चैनल) पर सीधा प्रसारण प. बंगाल, बिहार, ओरिसा, आसाम तथा नागालँड इन प्रान्तों में देखा गया। कथा में १५० पंडित रामायण का पाठ करते थे। सुंदरतापूर्ण आयोजन था जिसमें पूज्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी हंसदेवाचार्यजी महाराज पधारे थे। पूज्य गोवत्स राधाकृष्णजी महाराज पूरी कथा में उपस्थित थे। कथा में स्वामीजी ने कहा, 'सभी गुणों का सार हनुमान है। हनुमानजी अजेय योद्धा है। हनुमान कथा के श्रोता भगवान रामजी है। दयावान, बलवान, बुद्धिवान एवं चिंतनशील है हनुमानजी। शनि की साढेसाती से बचाती है हनुमद् उपासना। हनुमानजी सूर्य के शिष्य है और माँ सीताजी ने उन्हें अष्ट सिद्धियाँ और नौ निधि एवं चिरंजीवीत्व का आशीर्वाद दिया था।'

श्री हरि सत्संग समिती द्वारा महानगर मुंबई में कृष्णलीला कथा का आयोजन दि. ०८/०१/२०१३ से १३/१२/२०१३ तक किया गया। भव्य कथा मंडपमें

सुंदर पाँच देवताओंके ५ मंदिर बनाए थे। हजारो श्रोतागणों की उपस्थिति में कथा संपन्न हुई। रामकथा के प्रसिद्ध वक्ता श्री प्रेमभूषणजी की पावन उपस्थिति समापन पर थी। बौद्ध धर्मगुरु राहुल महाबोधीजी की भी पावन उपस्थिति रही। समापन के दिवस स्वामीजीने बौद्ध विहार में जाकर वहाँ से पुणे के लिए प्रस्थान किया।

दि. १६/०१/२०१३ को बुधवार को भरत नाट्य मंदिर, सदाशिव पेठ, पुणे-३० इस स्थान पर श्री समर्थ सेवा मंडळ, सज्जनगड द्वारा स्वामीजी को 'समर्थ संत सेवा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। गत वर्ष जयपुर निवासी आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी को स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी के करकमलोंद्वारा सम्मान किया गया। इसी कडी में इस वर्ष स्वामीजी को सम्मानित किया गया।

हजार अश्वमेध यज्ञ, सौ वाजपेय यज्ञ, लाख बार पृथ्वी की परीक्रमा करने से जो पुण्य प्राप्त होता है वह पुण्य कुंभवास एवं स्नान से प्राप्त होता है। स्वामीजी के साथ सभी भक्तों ने श्री अशोकजी देवडा, श्री नारायणदासजी मारु, ने त्रिवेणी संगम पर स्नान किया। शक्ति भोग आटा कंपनी के श्री केवल कृष्ण कुमारजी ने एवं श्री ज्ञानेश्वर समन्वय परिवार और गीता परिवार पानीपत के सुशीलजी गुप्ता कथा के यजमान थे। फिर कोलकाता को दि. ०१/०२/२०१३ को १ एकर भूमि में स्थित नूतन भवन एवं हनुमान मंदिर प्राणप्रतिष्ठा का कार्यक्रम था। श्री. शिवरतनजी मोहता उसके मुख्य यजमान थे। श्री.. युगलकिशोरजी कोटरीवाल, श्री. गौरी शंकरजी झंवर आदि उपस्थित थे।

दि. ०८/०२/२०१३ को सुबह १० बजे श्री गुरु कार्ष्णी कुंभ मेला शिबिर में विश्व शंकर तत्त्व प्रचार महासभा श्री आदि शंकर दंडी संन्यासी सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें २५० दंडी संन्यासी थे। कांची जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वतीजी एवं अन्य चार शंकराचार्यजी उपस्थित थे। सम्मेलन का नियोजन श्री गिरिधारीजी काले ने किया था।

जन्मदिन मंगल हो। दि. २५/०१/२०१३ को स्वामीजी का जन्मदिन मनाया गया जिसमें यजमान - श्री नरेन्द्रजी भाला, श्री अशोकजी देवडा, श्री. हरिप्रसादजी जालान, सौ. मीनाक्षीजी गुप्ता, सौ. वन्दना मंत्री थे। संत समागम के अंतर्गत जन्मोत्सव मनाया गया। श्री जालानजीने ६०० छात्र आसाम, नागालँड, पूर्व भारत के बुलावाए थे जिन्होंने वहाँ पर रामायण के चौपाइयाँ एवं गीत प्रस्तुत किया। यह पूर्ण कार्यक्रम दिशा टी.व्ही. चॅनल पर सीधा प्रसारित हो रहा था। पूरे देश के भक्त गण उपस्थित थे। मंडप पूर्ण भरा हुआ था। विश्व हिंदु परिषद के श्री अशोकजी सिंघल, श्रीमत् जगद्गुरु हंसदेवाचार्यजी, बद्रिनाथ के शंकराचार्य जगद्गुरु स्वामी वासुदेवानंद सरस्वतीजी महाराज, मलूक पीठाधीश राजेन्द्रदासजी महाराज, पू. प्रखरजी महाराज, स्वामी हरिचेतनानंदजी महाराज, पू. गोपराजजी वराहघाटवाले, पू. टाट बाबा महामंडलेश्वर भागवतानंदजी महाराज, स्वामी विश्वेश्वरानंदजी महाराज, स्वामी अखिलेश्वरानंदजी महाराज, पू. ब्रह्ममित्रानंदजी, पू. ललितानंदजी, पू. मनीषानंदजी, पू. अनुभूतानंदजी, पू. कैलाशानंदजी महाराज, पू. यतिन्द्रानंदजी महाराज, श्रीमद् ज्ञानदेव सिंगजी महाराज, स्वामी दिव्येन्द्रानंदजी महाराज, पू. ईश्वरदासजी महाराज आदि प्रमुख संत गण उपस्थित होकर स्वामीजी को माल्यार्पण शाल आदि से सम्मानित कर आशीर्वाद दिया। सभी संतों को स्वामीजी की ओर से चंदन, शाल, हार, पुस्तक, माउली मोती माला, दक्षिणा आदि समर्पित हुआ। सेलु गीता परिवार की ओर से स्वामीजी को चांदी का मुकुट पहनाया गया। ज्ञानेश्वर महाराज की आरती हुई। कुटिया पर पू. मोरारी बापू शुभ कामना देने हेतु एवं श्री जयराम आश्रम के महाराज पधारे थे। सभी ने कहा 'षष्टिपूर्ति धुलिया के जैसा ही यह उत्सव हो गया।'

दि. २०/०१/२०१३ को इलाहाबाद नगर निगम के द्वारा एक कार्यक्रम रखा गया। संत तुलसी दास समर्चन सम्मान जिसमें सम्मानित विभूतियाँ १) श्री रमेश भाई ओझा (भाई श्री) २) हरिप्रसाद चौरसिया बांसुरी प्रख्यात वादक ३) प्रा. अरिफ नजीर ४) श्री अजय याज्ञिक (मानस मयंक) इन्हे श्री मोरारी बापू के कर कमलोंद्वारा स्वामी कार्ष्णी श्री गुरुशरणानन्दजी (रमणरेती) के सान्निध्य में एवं पूर्व मुख्य न्यायाधिपति श्री रमेशचन्द्र लाहोटी, सर्वोच्च न्यायालय, भारत की अध्यक्षतामें सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि पूज्य स्वामी गोविन्द देव गिरिजी थे।

- श्री. हनुमान सारस्वत

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान - दानदाता सूची

१ लाख एवं उससे अधिक

पुणे : मे. लाईफ स्टाईल बिल्डर्स, श्री. शंकररावजी बेलदरे (पाटील), मे. पाटे डेव्हलपर्स, श्री. केदारजी कासट, श्री. सुबोधजी शुक्ल, सौ. रत्ना दाढे, **मुंबई :** सौ. सविता गोपाल अय्यर, सौ. महालक्ष्मी अय्यर, श्री. नवीनजी मानधना, श्री. गोरक्षनाथजी पैठणकर, श्रीमती वृंदा गो. निवर्गी, मे. रत्नादेवी काबरा चॅरिटेबल ट्रस्ट, श्रीहरि सत्संग समिती, **सोलापूर:** श्री. दत्तात्रेयजी बी मंत्री, श्री. मुरलीधरजी गो. मणियार, श्री. रामसुखजी एस चांडक, **कोलकाता :** श्री. जुगलकिशोरजी ककरानिया.

रु. ५० हजार से १ लाख

मुंबई: श्री. राधेश्यामजी दे. चांडक, **बुलढाणा :** श्री. किशोरजी केला, श्री. नंदकिशोरजी झंवर, श्री. नंदकिशोरजी आ. बाहेती, श्री. विनोदजी सु. भंडारी, **शिरवळ :** श्री. लक्ष्मीकांतजी राठी एवं परिवार

रु. २५ हजार से ५० हजार

पुणे: श्री. सोमनाथजी पोकळे, सौ. दुर्गेश्वरी चित्तर, श्री. गोविंदजी गो. जोशी, श्री. प्रवीणजी पाठक

रु. १० हजार से २५ हजार

पुणे: श्री. कृष्णकांतजी रासकर, श्री. सुधीरजी धरणे, सौ. रजनी नाईक, श्री. दत्तात्रयजी एवं सौ. नलिनी पाटे, श्री. मधुसुदनजी देसाई, श्री. गजाननजी पळसोदकर, श्रीमती हेमलता शेवगावकर, श्री. प्रकाशजी रोंधे, श्रीमती संजीवनी लिमये, श्री. मुरलीधरजी शिरोडे, सौ. उमा एवं सौ. शकुंतला मावाणी, सौ. संगीता एवं श्री. शरदजी जाधव, सौ. सुषमा आडकर, सौ. सुनंदा देशमुख, श्रीमती दीपा पाठक, श्री. माधवदासजी मोदी, श्री. सतीशजी भट्टड परिवार, सौ. मंदाकिनी इंगळे, श्री. अरुणजी एवं सौ. संध्या चिंचोले, मे. निर्मल प्रोविजन्स, सौ. संध्या पटवर्धन, श्री. नवनीतजी दोशी, श्रीमती कमला चक्रवर्ती, सौ. मृणाल विप्रदास, सौ. कुसुम दरक, श्री. राहुलजी दि. शिलेदार, श्री. प्रभाकरजी एवं सौ. शुभांगी पाचलग, सौ. सविता काळे, सौ. अंजली परळीकर, श्री. मकरंदजी कुलकर्णी, श्री. विवेकजी मेहेंदळे, श्री. सदानंदजी केंधे, सौ. सीमंतिनी कुलकर्णी, सौ. अपर्णा गोसावी, श्री श्रीकांतजी जोशी, श्री. गोविंदजी पद्मवार, श्री. विवेकजी कुलकर्णी, सौ. शकुंतला नवाथे, सौ. मनीषा शिंदे, श्री. रणधीरजी खवले परिवार, श्रीमती इंदिरा उडपी, श्री. प्रफुल्लजी दाढे, सौ. हेमलता झेंडे, श्री. एस.बी. फाटक, श्रीमती सुनीता बेलसरे, श्रीमती चेतना विश्वासराव, श्री. पद्माकरजी एवं सौ. गीतांजली जातेगावकर, सौ. उषा असनीकर, श्रीमती दमयंती माशाळकर, श्री. भानुदासजी खानकरी, सौ. मेधा हर्डीकर, सौ. शिवकन्या बाहेती, श्री. अरुणजी वाणी, श्री. सुधाकरजी वडनेरकर, श्री. भास्करजी जायदे, श्री. वसंतरावजी पाटील, श्रीमती जयश्री कुलकर्णी, श्री. प्रशांतजी कुलकर्णी, श्री. संजयजी कुमार मंत्री, श्री. रामेश्वरजी र. काबरा, श्री. मथुरादासजी बाहेती, सौ. पुष्पा मेरूकर, श्रीमती नंदिनी ठाकुरवनकर, **सोलापुर:** श्री. बालाप्रसादजी एस. मुंदडा, श्री. वेणूगोपालजी तापडिया, श्रीनिवास धर्मादाय निधी, सौ. प्रभावती धोका, श्री. राजगोपालजी मिणियार, मे. मेहुल कन्स्ट्रक्शन, डॉ. एस. प्रभाकरजी, श्री. गोवर्धनजी चाटला, सौ. विमलादेवी दरगड, मे. चौधरी फ्रेट कॉर्पोरेशन, श्री. पापाशेठजी बलदवा जनहित निधि, श्री. किशोरजी श्री चांडक, **गोरखपुर:** श्री. शंकरजी शरण श्रीवास्तव, **वालुर:** श्री. वसंतरावजी चौधरी, **उदगीर:** श्री. मनोजजी एच. लोया, **मुंबई:** मे. व्ही. पी. बेडेकर अँड सन्स प्रा. लि., श्रीमती सरस्वतीदेवी लोया चॅरिटेबल ट्रस्ट, श्री. रमेशचंद्र दे. चांडक, **सेलू:** श्री. जेठमलजी सुखनानी, सौ. सरला मालाणी, सौ. चंदा कासट, **बुलढाणा:** श्री. कमलजी नयन लाहोटी, **नागपुर:** श्री. ललितजी वि. लोया, **दौंड:** दौंड सत्संग मंडळ,

रु. ५ हजार से १० हजार

पुणे: श्री. अनिलजी कवीश्वर, सौ. आकांक्षा जोगाईकर, श्री. सतीशजी पत्की, सौ. सुलभा पाळंदे, श्री. सुनीलजी गाडेकर, श्री. मोहनजी कुलकर्णी, सौ. सुनिता धारणकर, सौ. यशोदा ताम्हनकर, श्रीमती सुषमा पु. कोकाटे, श्री. नीळकंठजी य. वैद्य, श्री. प्रकाशजी सारडा, श्री. मधुकरजी भा. सागडे, श्री. अरविंदजी देशमुख, सौ. विजया अ. धोमकर, श्री. अशोकजी रा. निमगांवकर, सौ. कांचन जोगळेकर, श्री. धनजीजी दि. वाणी, श्री. प्रकाशजी ज. वाणी, डॉ. श्रीकांतजी श्री. देसाई, सौ. शुभदा सरदेसाई, श्रीमती प्रभावती कुलकर्णी, श्री. पांडुरंगजी गवई, श्री. अशोकजी म. शिंदे, श्री. महेंद्रजी दि. कांबळे, श्री. प्रशांतजी म. शेवगावकर, श्री. त्रिंबक वा. दिवेकर, श्रीमती ललिता सामक, श्रीमती रजनी दीक्षित, श्री. सर्वेशजी परळीकर, श्री. दिनेशजी पटवर्धन, श्रीमती रेणू वाडेगांवकर, सौ. स्वाती सु. कुलकर्णी, श्री. माधवजी अ. आपटे, श्री. विजयजी ए. उंडाळे, श्री. दत्तात्रयजी श्री कुलकर्णी, श्री. निलेशजी अ. मालपाणी, **सोलापुर:** मे. तुलसी सेल्स कॉर्पोरेशन, सौ. अलकनंदा मुंदडा, सौ. माधुरी मुंदडा, श्री. छाजुरामजी पटवारी, श्री. अनिलजी पटवारी, डॉ. बी. शिवशंकर, श्री. ज्ञानेश्वरजी क. शेट्टी, श्रीमती साधना डागा, श्री. राजगोपालजी नं. मिणियार, डॉ. सौ. जयश्री कुलकर्णी, श्री. श्रीकृष्णजी रा. खटोड, श्री. राजगोपालजी ही. चांडक, श्री. मधुकरजी दि. फडणीस, श्री. लक्ष्मीनारायणजी दरगड, श्री. नारायणदासजी आसावा, **जालना:** श्री. ओमप्रकाशजी मणियार, **परभणी:** श्री. धनराजजी श्री सोमाणी, **डोंबिवली:** श्री. विनायकजी श्री. पुरोहित, **कोठळी:** श्री. नारायणजी ह. राठी, **बुलढाणा:** सौ. सरलादेवी भू. अग्रवाल, **अकोला:** श्री. गोपीकिशनजी चि. झंवर

निमंत्रण

॥ श्री वेदपुरुषाय नमः ॥



आदरणीय महानुभाव,

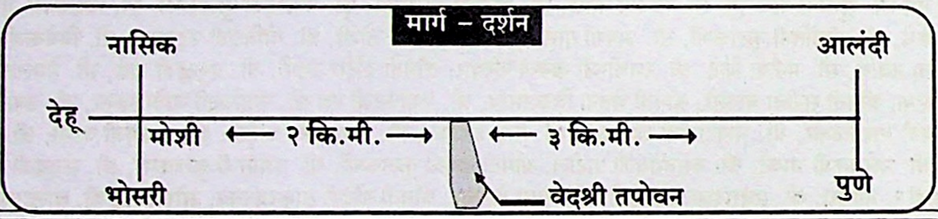
वर्ष १९९० में प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज की प्रेरणा से संस्थापित महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा जम्मू-काश्मीर से कर्नाटक तथा गुजरात से मणिपुर तक सभी वेदशाखाओं के २२ वेदविद्यालय कार्यरत रहकर वेदाध्ययन को निरंतर आगे बढा रहे हैं।

शब्दरक्षा के इस मुलभूत कार्य को स्थिरपद कर अब प्रतिष्ठान वेदांग, वेदार्थ एवं वेदांत के उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान हेतु संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज की समाधिस्थली आलंदी के समीप वेदश्री तपोवन को साकार कर रहा है।

इस भव्य प्रकल्प का भूमिपूजन समारोह निवृत्त शंकराचार्य प. पू. महामंडलेश्वर गुरुस्वामी श्री सत्यमित्रानन्द गिरिजी महाराज के करकमलों द्वारा तथा पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज की उपस्थिति में **चैत्र कृ. १०, शनि, दि. ४ मई २०१२ के पवित्र दिन प्रातः ९.३० को संपन्न होगा।** आपसे अनुरोध हैं कि इस समारोह में आप सभी इष्ट मित्रोंसहित उपस्थित रहकर हमारा उत्साह बढाएं।

कार्यस्थल,
वेदश्री तपोवन
आलंदी - देहू मार्ग

स्वागताकांक्षी,
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान



॥ श्रीहरिः ॥

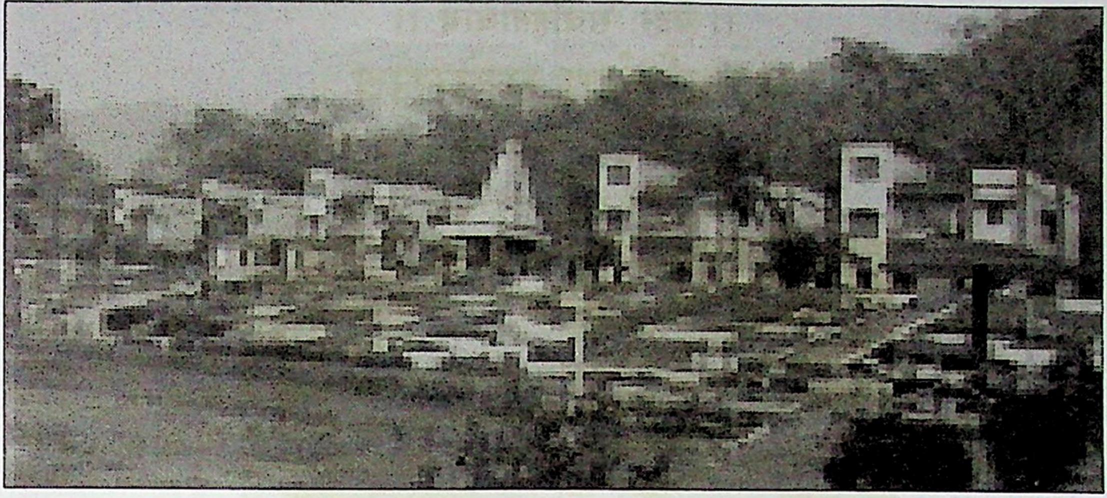
प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज का

✦ आगामी कार्यक्रम ई.स. २०१३ ✦

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम	दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
०१.०४ से ०७.०४	कोल्हापुर (महा.)	भागवत कथा	०५.०६ से १३.०६	स्वर्गाश्रम (ऋषि.)	शिवपुराण कथा
११.०४ से १९.०४	गोठमांगलोद (राज.)	देवी भागवत कथा	१५.०६ से २३.०६	स्वर्गाश्रम (ऋषि.)	भागवत कथा
२२.०४ से २४.०४	पुणे (निगडी)	विवेकानंद कथा	१४.०७ से २१.०७	स्वर्गाश्रम (ऋषि.)	गीता साधना शिविर
०४.०५	आलंदी	वेदश्री तपोवन भूमिपूजन	२१.०७	स्वर्गाश्रम (ऋषि.)	साधक सम्मेलन
१२.०५	हरिद्वार	दायित्व समर्पण समारोह	२२.०७	स्वर्गाश्रम (ऋषि.)	गुरुपूर्णिमा महोत्सव
१३.०५ से २५.०५	ऑस्ट्रेलिया	सत्संग	२३.०७ से २२.०८	स्वर्गाश्रम (ऋषि.)	श्री हरि-हर भक्ति महोत्सव
२६.०५ से ०३.०६	स्वर्गाश्रम (ऋषि.)	रामकथा			

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क ○ धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे-विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९, फैक्स (०२०) २५६७२०६९
www.dharmashree.org Email : dharmashree123@gmail.com



गीता साधना शिविर (स्वर्गाश्रम)

दिनांक १४ जुलाई, रविवार से २१ जुलाई, रविवार २०१३ तक

अधिसूचना

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित 'गीता-साधना-शिविर' अब साधकों का प्रधान आकर्षण बन गया है। भगवद्गीता भारतीय संस्कृति, धर्म तथा अध्यात्म साधना की मुख्य आधारशिला है। वेद-वेदांत की संपूर्ण शिक्षा का सार गीता है। **गीता का अध्ययन करना, इसे ठीक से समझने का प्रयास करना और इसकी साधना प्रणाली को दैनिक जीवन में उतारने की प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करना साधकों के लिये आसान हो जाए, इस हेतु गीता साधना शिविर का आयोजन किया जाता है।**

प्रातःस्मरण, योगासन, प्राणायाम, ध्यान, गीता-अध्ययन, प्रवचन, प्रश्नोत्तरी, चिंतनिका, संकीर्तन आदि के साथ-साथ नित्यकर्म शिक्षा (देवपूजा, संध्योपासना इत्यादि) के कारण आधुनिक एवं पारंपरिक सभी प्रक्रियाओं का सुंदर समन्वय होने से यह अपने ढंग का अनूठा शिविर होता है। ऐसे शिविर में मुख्यतः पू. गुरुदेव के अनुगृहीत दीक्षा प्राप्त साधकों के लिये आयोजित किए जाने पर भी कुछ अन्य जिज्ञासुओं को भी प्रवेश मिल जाता है। साधकों की संख्या सीमित रखी जाती है।

आगामी **१४ जुलाई से २१ जुलाई, २०१३ तक** की अवधि में शिविर का आयोजन वानप्रस्थ आश्रम (स्वर्गाश्रम), ऋषिकेश में किया जाना निश्चित हुआ है। **इच्छुक साधक अन्तिम पृष्ठों पर प्रकाशित फार्म पत्रिका से निकाल कर तथा उसे भर कर ०१ जून, २०१३ से पूर्व पुणे कार्यालय को भिजवा देवें।** विलम्ब से प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जावेगा। नियमानुसार अग्रक्रम से प्रवेशिका भेजी जायेगी-तभी अपना स्थान आरक्षित समझना चाहिये।

कार्यालय पत्राचार

गीता साधना शिविर, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल,
३, धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंटस्,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे - ४११०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९/२५६६४८१६

-: संपर्क :-

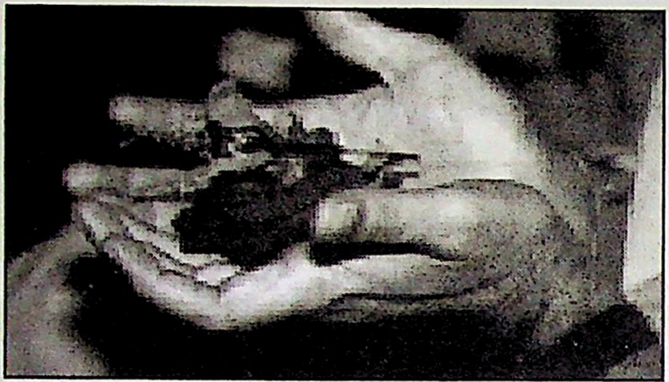
श्री दत्ताजी खामकर

।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

महर्षि वेदव्यास पूजन एवं साधक सम्मेलन

दि. २१ जुलाई एवं २२ जुलाई, २०१३



।। स्नेह - निमंत्रण ।।

कार्यक्रम स्थान : वानप्रस्थ आश्रम (स्वर्गाश्रम), ऋषिकेश

बन्धुवर,

सप्रेम जय श्रीकृष्ण !

आपको यह सूचित करते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का गुरुपूर्णिमा महोत्सव एवं संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल का साधक सम्मेलन वानप्रस्थाश्रम, ऋषिकेश में आयोजित किया जा रहा है। परम श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी (आचार्य श्री किशोरजी व्यास) महाराज गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर हमारे बीच होंगे। इस उत्सव में आप साग्रह आमंत्रित हैं।

भवदीय

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान *संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल*

साधक सम्मेलन

(रविवार, दिनांक २१ जुलाई, २०१३)

दोपहर : ४.०० से ४.३० सामूहिक जपानुष्ठान
४.३० से ५.३० पू. महाराजश्री के प्रवचन / ५.३० से ६.०० संवाद,
६.३० से ७.३० गंगा दर्शन-स्नान

रात्रि : ७.३० से ९.०० भोजन /९.०० से १०.०० स्नेह मिलन, गुणदर्शन/संवाद

विशेष : सभी साधक कृपया २१ जुलाई, २०१३ दोपहर ३ बजे तक आयोजन स्थल पर पहुँच जाएँ।

महर्षि वेदव्यास पूजन

(सोमवार, दि. २२ जुलाई २०१३)

महर्षि वेदव्यास जी भगवान् नारायण की ज्ञानकला के अवतार हैं, समस्त प्राचीन ऋषिमुनियों के प्रतिनिधि हैं, सनातन धर्म के समस्त संप्रदायों के परमाचार्य हैं, भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च उद्गाता हैं। वे गुरु-तत्त्व का साकार विग्रह हैं। संपूर्ण भारतीय संस्कृति ने उन्हें अपने गुरु रूप में स्वीकार किया है। कृतज्ञतापूर्वक उनका स्मरण-पूजन हमारा सांस्कृतिक उत्सव है। 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के वार्षिकोत्सव के रूप में यह मंगल-समारोह इस वर्ष गंगामैया के तट पर स्वर्गाश्रम में स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज की प्रेरक उपस्थिति में मनाया जाएगा।

सभी भाविक-भक्तों से अनुरोध है कि इस उत्सव में सहभागी होकर पुण्यलाभ अर्जित करें।

कार्यक्रम

प्रातः : ५.०० प्रातःस्मरण/७.०० से ७.३० : उपासना, प्रार्थना/७.३० से ८.३० : अल्पाहार/ ८.३० से १० : अभिषेक, महापूजा/१०.३० से ११.३० : हवन-संकीर्तन/ ११.३० से १२ : कार्यनिवेदन, आशीर्वचन तथा आरती, दर्शन एवं समर्पण/

दोपहर : १२.०० से १.०० तक गुरुदर्शन, समर्पण/१.०० से २.३० महाप्रसाद/३.०० साधक प्रस्थान

इस संपूर्ण कार्यक्रम के आयोजक यजमान हैं

श्री दामोदरदास मारू	– ०९४१४१-८९४०९
श्री उपेन्द्रनाथ माहेश्वरी	– ०९४१४१-८८३५५
श्री उमाशंकर डालमिया	– ०९४१४९-३६६४३
श्री अरुण तुलसियान	– ०९८२९०-३५९९२

कोटा (राजस्थान)

नोट :– गुरुपूर्णिमा संबंधी जानकारी, हरिहर भक्ति महोत्सव के सम्पर्क सूत्रों से भी प्राप्त की जा सकती है।

।। श्री हरिः ।।

श्री हरि-हर भक्ति महोत्सव

मंगलवार दि. २३ जुलाई, २०१३ से गुरुवार दि. २२ अगस्त २०१३ तक के अतिरिक्त महोत्सव के अंतर्गत होने वाले विभिन्न उपासना कार्यक्रम

प्रातः ६ से ९ श्री सुदर्शन महायज्ञ

प्रातः ७ से ९ चतुःसहस्र पार्थिव शिवलिंगार्चन/ ७ से ९ चतुःसहस्र श्रीयंत्र कुंकुमार्चना एवं शिवपूजा (सहस्र बिल्वार्चन), श्रीकृष्णपूजा (सहस्र तुलसीअर्चन), हनुमान अर्चना तथा श्री गणपति अर्चन, श्री सूर्य अर्चन आदि

प्रातः ९.३० से १२ **विशेष श्रीमद्भागवत कथा**

अपराह्न ३.०० से ३.३० श्री शिवमहिम्न एवं विष्णुसहस्रनाम पाठ

३.३० से ६ **विशेष श्रीमद्भागवत कथा**

सायं ६ से ९ बजे तक लघुरुद्र अभिषेक/

रात्रि ९ से ९.४५ श्रीराधा-कृष्ण दोलोत्सव (झूला) दर्शन, पदगान एवं आरती

परम पावनी गंगामैया का पावन तट, पवित्रतम श्रावणमास, शुकस्वरूप स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी (आचार्य किशोर जी व्यास) के श्रीमुख से पूर्ण विस्तार सहित हिन्दी में मासिक विशेष श्रीमद् भागवत कथा तथा सवालक्ष पार्थिव शिवलिंगार्चन, श्रीयंत्र कुंकुमार्चन, बिल्वार्चन, तुलसी अर्चना आदि, नित्य प्रदोष वेला में लघुरुद्राभिषेक, सामूहिक स्तोत्र पाठ, पदगान एवं ठाकुर श्रीश्यामा-श्याम का झूलादर्शन तथा वानप्रस्थ आश्रम का सुखद निवास, इन सबके कारण यह भक्ति महोत्सव वैकुंठधामतुल्य भावमय वातावरण में संपन्न होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

इस सरस भक्ति महोत्सव में सम्मिलित होकर श्रीमद्भागवत् कथा का श्रवण करना एवं विविध पूजा-अर्चनाओं में सहभागी होना परम पुण्यवान के लिये ही संभव है। आपसे हार्दिक अनुरोध है कि आप सपरिवार इसमें सहभागी हों एवं अपने परिचितों को भी यह जानकारी देकर इस पुण्यार्जन के लिये प्रेरित करें।

+ सूचना संकेत +

१) पार्थिव सहस्र शिवलिंगार्चन, लघुरुद्रअभिषेक, श्रीयंत्र-कुंकुमार्चन, बिल्वार्चन, तुलसी अर्चन तथा झूला आरती के दैनिक यजमान आप बन सकते हैं। हर आराधना की अलग-अलग सेवा (भेंट) निर्धारित रहेगी; जिसकी जानकारी श्री कमल नारायण भांगड़िया, हैदराबाद से (मो.न. नीचे देखें) प्राप्त की जा सकती है।

२) कथा अथवा आराधना, अभिषेक, अर्चना के यजमानों को अपने साथ कुछ भी सामग्री लाने की आवश्यकता नहीं है, पर पूजा के उपयुक्त भारतीय परिधान की अनिवार्यता के कारण अपने परिधान अवश्य लायें।

भोजन व्यवस्था :-

३) सशुल्क भोजन व्यवस्था सभी की वहीं की जा रही है। संयोजक - श्री चन्द्रकान्त केले, धुलिया एवं श्रीमती ललितादेवी मालपाणी जी परिवार, संगमनेर

४) भोजन व्यवस्था सभी अपनी-अपनी भी कर सकते हैं। सभी के निवासस्थान पर रसोई के बर्तन उपलब्ध हैं, गैस की व्यवस्था हो सकती है।

५) **वानप्रस्थ आश्रम के भोजनालय में भी कूपन पद्धति से** सात्त्विक भोजन, चाय तथा अल्पाहार उपलब्ध रहेगा।

६) निवास एवं भोजनविषयक उपरोक्त नियम सभी कथा यजमान, श्रोता एवं सत्संगी भाई-बहनों के लिये एक समान ही रहेंगे।

७) श्रावण मासिक कथा में तपस्या के लिये पधारना है - यह भान रहें। नित्योपयोगी चीजें तथा आवश्यक दवा-औषधि साथ रखें, पर मूल्यवान वस्तुएँ तथा आभूषण आदि चीजें बिल्कुल न लावें।

८) किसी भी प्रकार के यजमान न बनने पर भी सभी भाविक कथा श्रवण, पूजा दर्शन, स्तोत्र पाठ, पारायण-कीर्तनादि सभी कार्यक्रमों में श्रद्धापूर्वक निःसंकोच सहभागी हो सकते हैं।

९) अपनी भेंट, दान-दक्षिणा आदि आर्थिक सेवा कृपया **'श्रीकृष्ण सेवा निधि'** ट्रस्ट के नाम से प्रदान कर रसीद प्राप्त करें। श्रीकृष्ण सेवा निधि, धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११०१६, दूरभाष ०२०-२५६५२५८९

१०) इस संपूर्ण आयोजन का दायित्व एवं निर्णय के सभी अधिकार संयोजन समिति के अधीन रहेंगे। किसी भी विषय में अधिक जानकारी के लिये संयोजन समिति अथवा व्यवस्थापक मंडल से संपर्क करें।

संपर्क :

● श्री चंद्रकांत जी केले काका (धुलिया), ०९४२२२८५४६८ ● श्री कमलनारायणजी भांगडिया (हैदराबाद) ०९३४६२१०६६८ ● श्री नारायणदास जी मारू (सूरत), ०९४२७८३५५०९, ● श्री राकेशजी अग्रवाल (दिल्ली) ०९८१०१३७७९३ ● डॉ. द्वारकादास जी लड्डा (मानवत) ९४२३१४१३१८



॥ श्रीहरिः ॥

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल एवं समन्वय परिवार प्रणीत

गीता साधना शिविर

(वानप्रस्थ आश्रम)

स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश (उत्तराखंड)

सोमवार, दि. १४ जुलाई रविवार से दि. २१ जुलाई २०१३ तक

आवेदन-पत्र

प्रति, दि. / / २०१३

श्री, संयोजक महोदय,

जय श्रीकृष्ण!

मैं आपके द्वारा आयोजित 'गीता साधना शिविर' में सम्मिलित होना चाहता/चाहती हूँ। मेरे विषय में आवश्यक जानकारी निम्नानुसार है। कृपया मुझे शिविर में प्रवेश दें।

भवदीय,

हस्ताक्षर------------------

व्यक्ति–परिचय

नामः श्री/श्रीमती --

पिता / पति का नाम --

पत्राचार का संपूर्ण पता --

– -------------------------- पिनकोड --------------------

दूरभाष : निवास -------------------- कार्यालय --------------------

(एस.टी.डी. कोड) -------------------- मोबाईल --------------------

व्यवसाय -------------------- शिक्षा --------------------

आयु. -------------------- दीक्षा वर्ष --------------------

मातृभाषा -------------------- अन्य ज्ञात भाषाएँ --------------------

प्रवृत्ति परिचय

- क्या आप सत्संग, नित्य साधना, जप, पूजापाठ, योगाभ्यास आदि में से कुछ करते हैं? ....हाँ/नहीं
- यदि हाँ, तो कृपया संक्षेप में जानकारी दें। --
- सद्‌गुरु के रूप में आपकी श्रद्धा किसमें है? --
- गुरुमंत्र का जप प्रतिदिन कितनी माला होता है? --
- इस शिविर में सहभागी होकर आप क्या चाहेंगे? --
- कृपया एक नाम लिखें। आपके इष्ट देवता --
- आदर्श व्यक्तित्व --
- आपके प्रिय संत -------------------- प्रिय ग्रंथ --------------------
- आपका प्रिय तीर्थ -------------------- प्रिय लेखक --------------------

आदर्श महापुरुष -------------------- प्रिय कवि --------------------

- क्या आपकी कोई स्वास्थ्यविषयक समस्या है? (जैसे मधुमेह, रक्तचाप, हृदयविकार, आम्लपित्त)

- क्या आप किसी मानसिक समस्या से ग्रस्त है? (जैसे निद्रानाश, तनाव, नैराश्य, चिंता)

- क्या आप संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के 'गीता साधना शिविर' में इससे पहले उपस्थित रहे हैं? हाँ/नहीं।
- यदि हाँ, तो कितने एवम् कौनसे शिविरों में --

- पूर्व शिविर के अनुभवानुसार इस शिविर की व्यवस्था में सुधार हेतु कुछ सुझाव/अपेक्षा हो तो लिखें।

- क्या आप इस प्रकार के अन्य किसी साधना शिविर में उपस्थित थे? -------------------- हाँ/नहीं।
- यदि हाँ, तो कितने एवम् कौनसे शिविरों में --
- साथ में रु. २५००/- का पुणे में देय 'संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल' के नाम का बैंक का अकाउंट पेयी डिमांड ड्राफ्ट क्र. ----------------दि. का संलग्न है।

हस्ताक्षर--------------------

आवेदन पत्र कृपया निम्नलिखित पते पर भेजें:

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल : धर्मश्री कार्यालय, मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११०१६

दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९ फैक्स : (०२०) २५६७२०६९

नोट :- अधिक आवेदन पत्रों की आवश्यकता होने पर इसकी फोटो स्टेट प्रति भी भेजी जा सकती है।

शिविर से प्राप्त जानकारी अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाएँ।



सम्मान डॉ. पांडुरंगजी बाहेती का



गुणीजन पूजन



धर्मपीठ से उद्‌बोधन



योगपरिषद, लोनावला



पू. स्वामीजी को समर्थ पुरस्कार, पुणे



श्री गुरुजी धर्म - संस्कृति पुरस्कार

"DHARMSHREE" Periodical - Quarterly
Registered with The Registrar of Newspapers for India under No. MAH/HIN/ 2001/ 4041

॥ श्री गुरुः-शरणम् ॥





भारतमाता मन्दिर एवं समन्वय सेवा ट्रस्ट

दायित्व समर्पण समारोह

हार्दिक निमन्त्रण

बधाई!!! यह आनंद का विषय है कि, विश्वप्रसिद्ध भारतमाता मन्दिर एवं समन्वय सेवा ट्रस्ट के संस्थापक एवं परमाध्यक्ष निवृत्त शंकराचार्य महामण्डलेश्वर प्रात:स्मरणीय, **परमपूज्य सद्गुरु स्वामी श्री सत्यमित्रानन्द गिरि जी महाराज** के द्वारा भारतमाता मन्दिर, समन्वय सेवा ट्रस्ट एवं अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय परिवार के कार्याध्यक्ष पद का दायित्व **पूज्य आचार्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज** को सौंपा जाने की घोषणा की गई है। इस घोषणा से देश का धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जगत् परम हर्ष का अनुभव कर रहा है।

दायित्व-समर्पण एवं स्वीकरण का यह शुभ कार्य समन्वय कुटीर (हरिद्वार) में रविवार, दि. १२ मई २०१३ को शुभ मंगल मुहूर्त पर प्रात: ९ से १२ तक सम्पन्न होगा। प. पू. श्री गुरुस्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी महाराज श्री के निर्देशानुसार समन्वय परिवार एवं धर्मश्री संकुल के सभी सदस्य, स्नेही, सुहृद धर्मप्रेमी महानुभावों को इस मंगल-पर्व पर उपस्थित रहकर भारतीय गुरुशिष्य परम्परा के इस अनोखे मधुर, प्रेरक अनुभव में सहभागी होने के लिए हार्दिक निमन्त्रण प्रेषित है।

भारत माता की जय !

अधिक जानकारी के लिये

- समन्वय कुटीर कार्यालय - ०१३३४ - २६०२५६
- श्री. महंत ललितानंदजी - ०९४१०३२९९९९
- श्री. उदय नारायण पांडे - ०९४१५३१६९५९
- श्री. अविनाश मोरे - ०९४२०९००४२५
- श्री. सुशील गुप्ता - ०९२५४११००२१

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक श्रीकृष्ण सेवा निधि के लिए मुद्रक और प्रकाशक डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण ने मंदार प्रिंटर्स, ७५६ कसबा पेठ, पुणे ४११०११ में मुद्रित कराकर श्रीकृष्ण सेवा निधि, ३ मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग पुणे ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया। संपादक : डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण
सदस्यों के अतिरिक्त प्रसाद -मूल्य प्रति अंक रू ५/- मात्र